Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026 Posted at MBU Chandigarh RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

वर्ष 24 अंक 9 30 सितम्बर, 2024 मूल्य 5 रुपये

प्रधान की कलम से

जनकल्याण के सूत्रधार-जननायक देवीलाल

25 सितंबर 1914 – 06 अप्रैल 2001

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

जननायक चौ. देवी की जन कल्याण, परोपकार एवं समाजसेवी की दूरगामी सोच थी। वे ग्रामीण समाज व साधारण ग्रामीण जन की समस्याओं से भलीभांति वाकिफ थे। उनका मत था कि ग्रामीण समाज व देहांत के कल्याण व विकास के बगैर कोई भी राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता। अतः मात्र 16 वर्ष की आयु में ही ताऊ देवीलाल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर अपनी शिक्षा बीच में छोडकर अंग्रेजो भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े। स्वंय एक संपन्न व प्रगतिशील किसान होते हुए जीवन प्रयंत किसान, कामगार व खेतीहर मजदूरो के हितों के लिए प्रयासरत रहे और अपनी सैंकड़ो एकड़ भूमि मुजारों, भूमिहीनों को कृषि के लिये दान दे दी। सत्ता में रहते हुए व सत्ता से बाहर होते हुए उपेक्षित वर्ग के कल्याण हेतू जनता के सहयोग से न्याय युद्ध, यातायात अवरूद्ध, रेल रोको, पैदल यात्रा आदि शांतिपूर्ण प्रदर्शनों से किसान, कामगार और काश्तकार को जागृत किया और समस्त सरकार को जन कल्याण हेतु बाध्य किया।

उनका मत था कि प्रजांतत्र में जनता की अदालत ही सर्वोपरी है और आमजन की भावनाओं व हितों का सम्मान ही प्रजातंत्र की सही पहचान है। अपने शासनकाल में उन्होने 'भ्रष्टाचार बंद, पानी का प्रबंध' और 'लोकराज लोकराज से चलता है' जैसे अनुकरणीय सिद्धांत कायम किए, जिनकी आज मांग उठने लगी है कि नेता, प्रशासन व राजनीति तंत्र सबको जनता के अधीन करना होगा ताकि चौधरी देवीलाल के जन कल्याणकारी शासन को शास्वत किया जा सके। मुख्यमंत्री होते हुए भी जनता के बीच चले जाते व बुजुर्गों व आम आदमी से खुलकर बातचीत करते थे। आमजन की समस्याओं के निवारण के लिए जनता दरबार, प्रशासन आपके द्वार आदि कार्यक्रमों द्वारा प्रशासन व पुलिस की जबाबदेही सुनिश्चित की। लेकिन आज सरकार व प्रशासन की जन कल्याण के प्रति घोर लापरवाही देखी जा सकती है। विकलांगों, बुजुर्गों, विधवाओं की सम्मान पेंशन बिना जांच पड़ताल के बंद कर दी जाती है, यहां तक कि पेंशन धारक को मृत दिखा दिया जाता है और अपने को जिंदा होने का सबूत देने के लिये जन प्रदर्शन करना पड़ रहा है जोकि सरकार व प्रशासन की घोर लापरवाही को दर्शाता है।

उनकी सोच थी कि किसान को अपने मौलिक अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने व उनमें राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने हेतू किसान, कामगार व काश्तकार वर्ग को राजनैतिक सत्ता में प्रतिनिधित्व/भागीदारी दिया जाना जरूरी है इसलिए उन्होंने कमेरा वर्ग के गरीब व मध्यमवर्गीय व्यक्ति को भी राजनीति व सत्ता में स्थान दिलवाया। लेकिन आज किसान वर्ग पूर्णतः संगठनहीन व नेतृत्वहीन हो चुका है। जिस कारण किसान वर्ग को हर बार विरोध प्रदर्शन के दौरान प्रशासन व पुलिस कार्यवाही की प्रताड़ना झेलनी पड़ती है। किसान विरोधी कृषि अध्यादेशों के विरोध में लंबे समय तक चले किसान आंदोलन में भी लगभग 800 किसान अपनी जान गवां चुके लेकिन केंद्र सरकार द्वारा दिवंगत किसानों को मुआवजा तो क्या शोक संदेश तक नहीं भेजा गया और ना ही आंदोलन की समाप्ति के समय किसानों की मांगों के बारे में किये गये वायदे पूरे किये गये।

चौधरी साहब ने कभी भी छल–कपट व फरेब की राजनीति नहीं की। उनका कहना था कि मैं एक ग्रामीण हूं और चालाकी की राजनीति एक ग्रामीण की मर्यादा के खिलाफ है। वे सत्ता के गलियारों की बजाए अपने सीधे–सादे लोगों के साथ रहना पंसद करते थे। दगावान राजनैतिक साथियों के धोखा देकर अलग

शेष पेज–2 पर

शेष पेज–1

होने पर भी कभी विचलित नहीं हुए और सदैव एकछत्र शहंशाह बनकर उभरे। किसान–मजदूर के हितों के लिए प्रधानमंत्री की पेशकश को ठुकरा कर स्वर्गीय श्री वी.पी. सिंह व बाद में स्वर्गीय श्री चंद्रशेखर तथा स्वर्गीय देवेगोड़ा को प्रधानमंत्री बनवाकर निस्वार्थ व त्याग की एक ऐतिहासिक मिशाल पेश की और किंगमेकर बन गए। सोनीपत में अपने अतिंम भाषण में उन्होने कहा था कि हम राजनीति में देश की रक्षा व विकास के लिए आते हैं ना कि सत्ता सुख भोगने के लिए और निज स्वार्थ को त्यागकर जनहित में जुट जाना ही सही राजनीति है। आज सत्ता प्राप्ति के लिये सत्ताधारी पक्ष की सोच कल्याणकारी नीति की बजाये सत्ता प्राप्ति पर केंद्रित होती जा रही है और इसके लिये विधायकों, मंत्रियों को दूरदराज होटलों में बंद करके सत्ता को बचाने के लिये उचित अनुचित जुगाड़ के लिए करोड़ों रुपये की पेशकश की जाती है।

हरियाणा प्रदेश के गठन के लिए उनका सबसे अधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। पंजाब के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्वर्गीय सरदार प्रताप सिंह कैरों के समक्ष उन्होंने हरियाणा वासियों के हक के लिए जबरदस्त पैरवी की और उनके आंदोलन के आगे केंद्र सरकार को झुकना पड़ा और स्वर्गीय प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी को उनकी अलग हिंदी भाषी क्षेत्र की मांग को मानना पड़ा। छोटे काश्तकारों को उनका अधिकार दिलाने हेतू पंजाब विधानसभा में भू–पट्टेदारी नियम बनवाकर मुजारों की बेदखली को रोका गया। इस अधिनियम से 6 साल से भूमि काश्त कर रहे मुजारों को अदालत के माध्यम से आसान किश्तों पर जमीन खरीदने का अधिकार दिलवाकर जमीन का मालिक बनवाया।

उनकी एक विशेष कल्याणकारी सोच थी कि जन कल्याणकारी व्यवस्था से ही ग्रामीण समाज के असहाय व गरीब व्यक्ति को राहत मिल सकती है। अपने शासनकाल में जनता के लिए बुढापा पैंशन, विकलांग पैंशन, विधवा पैंशन, बेरोजगार पैंशन, जच्चा–बच्चा योजना, गांव–गांव हरीजन चौपाल आदि अनेकों कल्याणकारी योजनाएं शुरू की जिनका आज पुरे राष्ट्र में अनुसरण किया जा रहा है। महिला शिक्षा के विकास के लिए पंचायतों को तीन गुणा मैचिंग ग्रांट देने का प्रावधान किया। खेलों को बढ़ावा देने तथा युवाओं के लिये रोजगार सुनिश्चित करने हेतु सरकारी नौकरी व पुलिस बल में 3 प्रतिशत खेल कोटे के साथ–साथ युवाओं के लिये नौकरी हेतु साक्षात्कार व परीक्षा देने जाने के लिये रोडवेज की बसों में मुफ्त सफर का प्रावधान किया। साईकिल टॉकन व ट्रैक्टर पर रोड़ टैक्स माफ किया। वर्ष 1987 में मुख्यमंत्री बनते ही बुजुर्गो के लिये बुढ़ापा पैंशन 100 रुपये किया जोकि देश में ऐसे पहले कल्याकारी मुख्यमंत्री थे जिन्होंने बुजुर्गो की बुढ़ापा पैंशन जारी की। ऐसी जन कल्याणकारी सोच के कारण उनको समस्त राष्ट्र में ताऊ के नाम का सम्माननीय संबोधन प्राप्त हुआ। अपनी जनप्रिय व न्यायवादी छवि के कारण वर्ष 1987 में विधानसभा की 90 सीटों में से 85 सीटें जीतकर एकछत्र नेता के तौर पर एक नई मिशाल कायम की, जिसकी बराबरी होना शायद असंभव है। इस अनुठी राजनैतिक विचारधारा की बदौलत वर्ष 1987 में जनविरोधी कांग्रेंस का सफाया कर दिया जो कि वर्तमान राजनीतिज्ञों के लिए एक ऐतिहासिक अजुबे से कम नहीं है। उनका मत था कि जनता द्वारा चुने गये प्रतिनिधि को पूर्णतयाः निष्पक्ष व ईमानदारी से जनता के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। अतः जनता की उम्मीदों पर खरा न उतरने वाले जन प्रतिनिधि को वापिस बुलाने का जन प्रतिनिधि अधिकार मतदाता के लिये सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

कांग्रेंस की किसान विरोधी व तानाशाही नीतियों के विरोध में कांग्रेस पार्टी छोड़ दी और गांव–गांव जाकर किसानों, दलितों और मजदूरों की रक्षा के लिए संघर्ष समिति गठित की। सन 1975 में जब तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने देश में आपातकालीन स्थिति लागू कर दी तो उसका डटकर विरोध किया और जेल भी गए, जहां से 19 माह बाद रिहा होकर समस्त विपक्ष को इकट्ठा करके व राष्ट्रभर में कांग्रेंस की जन विरोधी कारगुजारियों से जनता को आगाह करके सर्वदलीय जनता पार्टी के गठन में अहम भूमिका निभाई तथा कांग्रेस का सफाया हुआ। आमजन के प्रति उनके संघर्ष व लगाव के कारण पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने ताऊ को जनता का प्रतीक कहा। उनकी सोच थी कि किसान मजदूर के जीवन यापन के मुख्य धंधे–कृषि का विकास थमने लगा है जो कि अब पूर्णतया घाटे का सौदा बन चुका है, अतः हरियाणा में ग्रामीण उद्योग योजना लागू की, जिससे कृषि का भी विस्तार हुआ लेकिन अगली सरकारों

ने इस योजना को बंद कर दिया। इसके साथ ही ग्रामीण जनता के लिए रोजगार सुनिश्चित करने हेतू एक परिवार एक रोजगार आयोग गठित किया था जिसको सन् 1991 में बंद कर दिया गया। इसका परिणाम यह हुआ कि आज हरियाणा प्रांत बेरोजगारी में 37.3 के स्कोर पर पहुंच चुका है जोकि राष्ट्र की बेरोजगारी 8.8 की दर से सबसे उच्च स्तर पर है।

वे मानते थे किसान सर्वाधिक मेहनती, भोला, ईमानदार व देशभक्त समुदाय है। वह एक अनिश्चित धंधे में लगा हुआ है, जो कि आज दयनीय स्तर पर पहुंच चुका है। चौधरी साहब ने सत्ता में आते ही प्राकृतिक आपदाओं से होने वाले नुकसान पर किसान को सरकारी कोष से मुआवजा दिलवाने का प्रावधान किया और वर्ष 1978 में ओलावृष्टि का 400 रूपये प्रति एकड़ मुआवजा दिलवाया और यह योजना आज तक चालू है। बाद में किसान के खेत के साथ खड़े वृक्षों में से किसान को वन विभाग से आधी कीमत दिलवाई। वर्ष 1987 में किसानों, काश्तकारों, मजदूरों व श्रमिकों के 10–10 हजार रुपये तक के ऋण माफ किए, जोकि कुल मिलाकर उस समय 250 करोड़ रुपये के कर्जे माफ किये थे और किसान–कामगार के लिए किसान मंडी, अपनी मंडी, मैचिंग ग्रांट, काम के बदले अनाज आदि लाभकारी योजनाएं शुरू की जो कि बाद में आने वाली सरकारों ने धीरे–धीरे बंद कर दी, जिस कारण किसान मजदूर आज फिर सरकारी उपेक्षा के कारण दयनीय हालत से गुजर रहा है। आज अन्नदाता खेत में आत्महत्या करने पर मजबूर है। देश में प्रतिवर्ष 18000 किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हो रहे हैं और उसका बेटा सीमा पर दुश्मन की गोली खा रहा है लेकिन हालात की सुध लेने वालों को इसके लिए फुर्सत ही नहीं है।

आज ताऊ देवीलाल की नीतियों व सिद्धांतों का अनुशरण करने की आवश्यकता है। इससे सरकारी नीति व कार्यशैली निर्धारण में मदद मिलेगी। चौधरी साहब की जन कल्याणकारी योजनाओं व निश्छल राजनीति से प्ररेणा लेकर प्रशासनिक व राजनैतिक तंत्र की विचारधारा को बदलने की नितांत आवश्यकता है ताकि ग्रामीण गरीब–मजदूर व किसान वर्ग के कल्याण व उत्थान के साथ–साथ स्वच्छ प्रशासन के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। वास्तव में ताऊ देवीलाल गरीब व असहाय समाज की आवाज को बुलंद करने वाले एक सशक्त प्रवक्ता थे इसलिए आज जन साधारण विशेषकर ग्रामीण गरीब–मजदूर, कामगार व छोटे काश्तकारों को अपने अधिकारों व हितों के प्रति जागरूक करने की आवश्कता है ताकि दलगत राजनीतिज्ञ व संबंधित प्रशासन इनके हितों की अनदेखी न कर सकें तभी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का एक स्वावलंबी व स्वस्थ ग्रामीण समाज का सपना पूरा किया जा सकता है। किसान–कामगार–काश्तकार व दलित वर्ग के इस महान व्यक्तित्व के सम्मान के लिये उनको केन्द्रिय सरकार द्वारा "भारत रत्न" से सुशोभित किया जाना चाहिए। अतः एक उदार हृदय एवं महान आत्मा–ताऊ देवीलाल को लेखक सदैव नत मस्तक होकर प्रणाम करता रहेगा क्योंकि वे जन कल्याण योद्धा के रूप में समस्त राष्ट्र में समाज कल्याण के प्रथम सूत्रधार बने। उनकी कल्याणकारी योजनाओं को देखते हुये पूरे भारतवर्ष में उन्हें ताऊ देवीलाल के नाम से पूकारा जाने लगा। ताऊ कहते थे कि प्रजातंत्र में जनता की अदालत ही सर्वोपरी है।

किसानों की आवाज का सुर्य उदय 25 सितंबर 1914 को तेजाखेड़ा गांव जिला सिरसा में हुआ और लगभग 60 साल तक किसान–कामगार की पुरजोर आवाज बुलंद करते हुए 06 अप्रैल 2001 को धरती पुत्र की आत्मा धरती में विलीन हो गई और सुर्य अस्त हो गया। आज जबकि राष्ट्र का हर किसान पुरी तरह पीड़ित है, वह अपनी समस्याओं के समाधान व निवारण हेतू किसी अन्य सुर्य (धरती पुत्र) के उदय होने की इंतजार में हैं।

लेखक 1977 से 1979, 1987 से 1989 तक चौधरी साहब के गुप्तचार विभाग के अधिकारी तथा प्रमुख (गुप्तचार विभाग) रहे हैं।

डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस. (सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महा निदेशक हरियाणा,
प्रधान अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति व
जाट सभा, चंडीगढ़ व पंचकूला एवं
चेयरमैन, चौ० छोटूराम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Saheed Bhagat Singh

(September 1907-23 March 1931)

Smt. Krishna Malik, Chairperson
Ch. Bharat Singh Memorial Sports Shikshan Sansthan,
Nidani, Jind (Haryana)

Saheed Bhagat Singh was a charismatic Indian revolutionary who participated in the murder of a junior British police officer and an Indian head constable in mistaken retaliation for the death of an Indian nationalist. He also took part in a largely symbolic bombing of the Central Legislative Assembly in Delhi and a hunger strike in jail, which-on the back of sympathetic coverage in Indian-owned newspapers-turned him into a household name in Punjab region, and after his execution at age 23 into a martyr and folk hero in Northern India. Borrowing ideas from Bolshevism and anarchism, he electrified a growing militancy in India in the 1930s, and prompted urgent introspection within the Indian National Congress's nonviolent but eventually successful campaign for India's independence.

In December 1928, Bhagat Singh and an associate, Shivaram Rajguru, both members of a small revolutionary group, the Hindustan Socialist Republican Association (also Army, or HSRA), shot dead a 21-year-old British police officer, John Saunders, in Lahore, Punjab, in what is today Pakistan, mistaking Saunders, who was still on probation, for the British senior police superintendent, James Scott, whom they had intended to assassinate. [13] They held Scott responsible for the death of a popular Indian nationalist leader Lala Lajpat Rai for having ordered a lathi (baton) charge in which Rai was injured and two weeks thereafter died of a heart attack. As Saunders exited a police station on a motorcycle, he was felled by a single bullet fired from across the street by Rajguru, a marksman. As he lay injured, he was shot at close range several times by Singh, the postmortem report showing eight bullet wounds. Another associate of Singh, Chandra Shekhar Azad, shot dead an Indian police head constable, Channan Singh, who attempted to give chase as Singh and Rajguru fled.

After having escaped, Bhagat Singh and his associates used pseudonyms to publicly announce avenging Lajpat Rai's death, putting up prepared posters that they had altered to show John Saunders as their intended target instead of James Scott. Singh was thereafter on the run for many months, and no convictions resulted at the time. Surfacing again in April 1929, he and another associate, Batukeshwar Dutt, set off two low-intensity homemade bombs among some unoccupied benches of the Central Legislative Assembly in Delhi. They showered leaflets from the gallery on the legislators below, shouted slogans, and allowed the authorities to arrest them. The arrest, and the resulting publicity, brought to light Singh's complicity in the John Saunders case. Awaiting trial, Singh gained public sympathy after he joined fellow defendant Jatin Das in a hunger strike, demanding better prison conditions for Indian prisoners, the strike ending in Das's death from starvation in September 1929.

Bhagat Singh was convicted of the murder of John Saunders and Channan Singh, and hanged in March 1931, aged 23. He became a popular folk hero after his death. Jawaharlal Nehru wrote about him: "Bhagat Singh did not become popular because of his act of terrorism but because he seemed to vindicate, for the moment, the honour of Lala Lajpat Rai, and through him of the nation. He became a symbol; the act was forgotten, the symbol remained, and within a few months each town and village of the Punjab, and to a lesser extent in the rest of northern India, resounded with his name." In still later years, Singh, an atheist and socialist in adulthood, won admirers in India from among a political spectrum that included both communists and right-wing Hindu nationalists. Although many of Singh's associates, as well as many Indian anti- colonial revolutionaries, were also involved in daring acts and were either executed or died violent deaths, few came to be lionised in popular art and literature as did Singh, who is sometimes referred to as the Shaheed-e-Azam ("Great martyr" in Urdu and Punjabi).

Early life

Bhagat Singh was born on 27 September 1907 in the village of Banga in the Lyallpur district of the Punjab in what was then British India and is today Pakistan; he was the second of seven children- four sons, and three daughters-born to Vidyavati and her husband Kishan Singh Sandhu. Bhagat Singh's father and his uncle Ajit Singh were active in progressive politics, taking part in the agitation around the Canal Colonization Bill in 1907, and later the Ghadar Movement of 1914-1915.

After being sent to the village school in Banga for a few years, Bhagat Singh was enrolled in the Dayanand Anglo-Vedic School in Lahore. In 1923, he joined the National College in Lahore, founded two years earlier by Lala Lajpat Rai in response to Mahatma Gandhi's non-cooperation movement, which urged Indian students to shun schools and colleges subsidized by the British Indian government.

Police became concerned with Singh's influence on youths and arrested him in May 1927 on the pretext that he had been involved in a bombing that had taken place in Lahore in October 1926. He was released on a surety of Rs. 60,000 five weeks after his arrest. He wrote for, and edited, Urdu and Punjabi newspapers, published in Amritsar and also contributed to low-priced pamphlets published by the Naujawan Bharat Sabha that excoriated the British. He also wrote for Kirti, the journal of the Kirti Kisan Party ("Workers and Peasants Party") and briefly for the Veer Arjun newspaper,

published in Delhi. He often used pseudonyms, including names such as Balwant, Ranjit and Vidhrohi.

Revolutionary activities Killing of John Saunders

In 1928, the British government set up the Simon Commission to report on the political situation in India. Some Indian political parties boycotted the Commission because there were no Indians in its membership,[c] and there were protests across the country. When the Commission visited Lahore on 30 October 1928, Lala Lajpat Rai led a march in protest against it. Police attempts to disperse the large crowd resulted in violence. The superintendent of police, James A. Scott, ordered the police to lathi charge (use batons against) the protesters and personally assaulted Rai, who was injured. Rai died of a heart attack on 17 November 1928. Doctors thought that his death might have been hastened by the injuries he had received. When the matter was raised in the Parliament of the United Kingdom, the British Government denied any role in Rai's death.

Singh was a prominent member of the Hindustan Republican Association (HRA) and was probably responsible, in large part, for its change of name to Hindustan Socialist Republican Association (HSRA) in 1928. The HSRA vowed to avenge Rai's death. Singh conspired with revolutionaries like Shivaram Rajguru, Sukhdev Thapar, and Chandrashekhar Azad to kill Scott. However, in a case of mistaken identity, the plotters shot John P. Saunders, an Assistant Superintendent of Police, as he was leaving the District Police Headquarters in Lahore on 17 December 1928.

Contemporary reaction to the killing differ substantially from the education that later surfaced. The Naujawan Bharat Sabha, which had organized the Lahore protest march along with the HSRA, found that attendance at its subsequent public meetings dropped sharply. Politicians, activists, and newspapers, including the People, which Rai had founded in 1925, stressed that non-co-operation was preferable to violence. The murder was condemned as a retrograde action by Mahatma Gandhi, the Congress leader, but Jawaharlal Nehru later wrote that:

Bhagat Singh did not become popular because of his act of terrorism but because he seemed to vindicate, for the moment, the honour of Lala Lajpat Rai, and through him of the nation. He became a symbol, the act was forgotten, the symbol remained, and within a few months each town and village of the Punjab, and to a lesser extent in the rest of northern India, resounded with his name. Innumerable songs grew about him and the popularity that the man achieved was something amazing.

Killing of Channan Singh

After killing Saunders, the group escaped through the D.A.V. College entrance, across the road from the District Police Headquarters. Chanan Singh, a Head Constable who was chasing them, was shot dead by Chandrasekhar Azad. They then fled on bicycles to pre-arranged safe houses. The police launched a massive search operation to catch them, blocking all entrances and exits to and from the city; the CID kept a watch on all young men leaving Lahore. The fugitives hid for the next two days. On 19 December 1928, Sukhdev called on Durgawati Devi, sometimes known as Durga Bhabhi, wife of another HSRA member, Bhagwati Charan Vohra, for help, which she agreed to provide. They decided to catch the train departing from Lahore to Bathinda en route to Howrah (Calcutta) early the next morning.

Escape from Lahore

Bhagat Singh and Rajguru, both carrying loaded revolvers, left the house early the next day. Dressed in western attire (Bhagat Singh cut his hair, shaved his beard and wore a hat over cropped hair), and carrying Devi's sleeping child, Singh and Devi passed as a young couple, while Rajguru carried their luggage as their servant. At the station, Singh managed to conceal his identity while buying tickets, and the three boarded the train heading to Cawnpore (now Kanpur). There they boarded a train for Lucknow since the CID at Howrah railway station usually scrutinised passengers on the direct train from Lahore. At Lucknow, Rajguru left separately for Benares while Singh, Devi and the infant went to Howrah, with all except Singh returning to Lahore a few days later.

Delhi Assembly bombing and arrest

For some time, Bhagat Singh had been exploiting the power of drama as a means to inspire the revolt against the British, purchasing a magic lantern to show slides that enlivened his talks about revolutionaries such as Ram Prasad Bismil who had died as a result of the Kakori conspiracy. In 1929, he proposed a dramatic act to the HSRA intended to gain massive publicity for their aims. Influenced by Auguste Vaillant, a French anarchist who had bombed the Chamber of Deputies in Paris, Singh's plan was to explode a bomb inside the Central Legislative Assembly. The nominal intention was to protest against the Public Safety Bill, and the Trade Dispute Act, which had been rejected by the Assembly but were being enacted by the Viceroy using his special powers; the actual intention was for the perpetrators to allow themselves to be arrested so that they could use court appearances as a stage to publicise their cause.

The HSRA leadership was initially opposed to Bhagat's participation in the bombing because they were certain that his prior involvement in the Saunders shooting meant that his arrest would ultimately result in his execution. However, they eventually decided that he was their most suitable candidate. On 8 April 1929, Singh, accompanied by Batukeshwar Dutt, threw two bombs into the Assembly chamber from its public gallery while it was in session. The bombs had been designed not to kill, but some members, including George Ernest Schuster, the finance member of the Viceroy's Executive Council, were injured. The smoke from the bombs filled the Assembly so that Singh and the Dutt could probably have escaped in the confusion had they wished. Instead, they stayed shouting the slogan "Inquilab Zindabad!" ("Long Live the Revolution") and threw leaflets. The two men were arrested and subsequently moved through a series of jails in Delhi.

Assembly case trial

According to Neeti Nair, associate professor of history, "public criticism of this terrorist action was unequivocal." Gandhi, once again, issued strong words of disapproval of their deed. Nonetheless, the jailed Bhagat was reported to be elated, and referred to the subsequent legal proceedings as a "drama". Singh and Dutt eventually responded to the criticism by writing the Assembly Bomb Statement.

We hold human life sacred beyond words. We are neither perpetrators of dastardly outrages. nor are we lunatics' as the Tribune of Lahore and some others would have it believed... Force when aggressively applied is 'violence' and is, therefore, morally unjustifiable, but when it is used in the furtherance of a legitimate cause, it has its moral justification.

The trial began in the first week of June, following a preliminary hearing in May. On 12 June, both men were sentenced to life imprisonment for. "causing explosions of a nature likely to endanger life, unlawfully and maliciously." Dutt had been defended by Asaf Ali, while Singh defended himself. Doubts have been raised about the accuracy of testimony offered at the trial. One key discrepancy concerns the automatic pistol that Singh had been carrying when he was arrested. Some witnesses said that he had fired two or three shots while the police sergeant who arrested him testified that the gun was pointed downward when he took it from him and that Singh "was playing with it." According to an article in the India Law Journal, the prosecution witnesses were coached, their accounts were incorrect, and Singh had turned over the pistol himself. Singh was given a life sentence.

Arrest of Associates

In 1929, the HSRA had set up bomb factories in Lahore and Saharanpur. On 15 April 1929, the Lahore bomb factory was discovered by the police, leading to the arrest of other members of HSRA, including Sukhdev, Kishori Lal, and Jai Gopal. Not long after this, the Saharanpur factory was also raided and some of the conspirators became informants. With the new information available, the police were able to connect the three strands of the Saunders murder, Assembly bombing, and bomb manufacture. Singh, Sukhdev, Rajguru, and 21 others were charged with the Saunders murder.

Hunger strike and Lahore conspiracy case

Singh was re-arrested for murdering Saundersand Chanan Singh based on substantial evidence against him, including statements by his associates, Hans Raj Vohra and Jai Gopal. His life sentence in the Assembly Bomb case was deferred until the Saunders case was decided. He was sent to Central Jail Mianwali from the Delhi jail. There he witnessed discrimination between European and Indian prisoners. He considered himself, along with others, to be a political prisoner. He noted that he had received an enhanced diet at Delhi which was not being provided at Mianwali. He led other Indian, self-identified political prisoners he felt were being treated as common criminals in a hunger strike. They demanded equality in food standards, clothing, toiletries, and other hygienic necessities, as well as access to books and a daily newspaper. They argued that they should not be forced to do manual labour or any undignified work in the jail.

The hunger strike inspired a rise in public support for Singh and his colleagues from around June 1929. The Tribune newspaper was particularly prominent in this movement and reported on mass meetings in places such as Lahore and Amritsar. The government had to apply Section 144 of the criminal code in an attempt to limit gatherings.

Daily milap poster of the Lahore conspiracy case 1930.Death sentence of Bhagat Singh, Sukhdev and Rajguru.

Jawaharlal Nehru met Singh and the other strikers in Central Jail Mianwali. After the meeting, he stated:

I was very much pained to see the distress of the heroes. They have staked their lives in this struggle. They want that political prisoners should be treated as political prisoners. I am quite hopeful that their sacrifice would be crowned with success.

Muhammad Ali Jinnah spoke in support of the strikers in the Assembly, saying:

The man who goes on hunger strike has a soul. He is moved by that soul, and he believes in the justice of his cause... however much you deplore them and, however, much you say they are misguided, it is the system, this damnable system of governance, which is resented by the people.

The government tried to break the strike by placing different food items in the prison cells to test the prisoners' resolve. Water pitchers were filled with milk so that either the prisoners remained thirsty or broke their strike, nobody faltered and the impasse continued. The authorities then attempted force-feeding the prisoners but this was resisted. [50][d] With the matter still unresolved, the Indian Viceroy, Lord Irwin, cut short his vacation in Simla to discuss the situation with jail authorities. [52] Since the activities of the hunger strikers had gained popularity and attention amongst the people nationwide, the government decided to advance the start of the Saunders murder trial, which was henceforth called the Lahore Conspiracy Case. Singh was transported to Borstal Jail, Lahore, and the trial began there on 10 July 1929. In addition to charging them with the murder of Saunders, Singh and the 27 other prisoners were charged with plotting a conspiracy to murder Scott, and waging a war against the King. Singh, still on hunger strike, had to be carried to the court handcuffed on a stretcher; he had lost 14 pounds (6.4 kg) from his original weight of 133 pounds (60 kg) since beginning the strike.

The government was beginning to make concessions but refused to move on the core issue of recognising the classification of "political prisoner". In the eyes of officials, if someone broke the law then that was a personal act, not a political one, and they were common criminals. By now, the condition of another hunger striker, Jatindra Nath Das, lodged in the same jail, had deteriorated considerably. The Jail committee recommended his unconditional release, but the government rejected the suggestion and offered to release him on bail. On

13 September 1929, Das died after a 63-day hunger strike. Almost all the nationalist leaders in the country paid tribute to Das' death. Mohammad Alam and Gopi Chand Bhargava resigned from the Punjab Legislative Council in protest, and Nehru moved a successful adjournment motion in the Central Assembly as a censure against the "inhumane treatment" of the Lahore prisoners. Singh finally heeded a resolution of the Congress party, and a request by his father, ending his hunger strike on 5 October 1929 after 116 days. During this period, Singh's popularity among common Indians extended beyond Punjab.

Singh's attention now turned to his trial, where he was to face a Crown prosecution team comprising C. H. Carden-Noad, Kalandar Ali Khan, Jai Gopal Lal, and the prosecuting inspector, Bakshi Dina Nath. The defence was composed of eight lawyers. Prem Dutt Verma, the youngest amongst the 27 accused, threw his slipper at Gopal when he turned and became a prosecution witness in court. As a result, the magistrate ordered that all the accused should be handcuffed.[44] Singh and others refused to be handcuffed and were subjected to brutal beating. The revolutionaries refused to attend the court and Singh wrote a letter to the magistrate citing various reasons for their refusal. The magistrate ordered the trial to proceed without the accused or members of the HSRA. This was a setback for Singh as he could no longer use the trial as a forum to publicise his views.

Special Tribunal

To speed up the slow trial, the Viceroy, Lord Irwin, declared an emergency on 1 May 1930 and introduced an ordinance to set up a special tribunal composed of three high court judges for the case. This decision cut short the normal process of justice as the only appeal after the tribunal was to the Privy Council located in England.

On 2 July 1930, a habeas corpus petition was filed in the High Court challenging the ordinance. on the grounds that it was ultra vires and, therefore, illegal; the Viceroy had no powers to shorten the customary process of determining justice. The petition argued that the Defence of India Act 1915 allowed the Viceroy to introduce an ordinance, and set up such a tribunal, only under conditions of a breakdown of law-and-order, which, it was claimed in this case, had not occurred. However, the petition was dismissed as being premature.

Carden-Noad presented the government's charges of conducting robberies, and the illegal acquisition of arms and ammunition among others. The evidence of G. T. H. Hamilton Harding, the Lahore superintendent of police, shocked the court. He stated that he had filed the first information report against the accused under specific orders from the chief secretary to the governor of Punjab and that he was unaware of the details of the case. The prosecution depended mainly on the evidence of P. N. Ghosh, Hans Raj Vohra, and Jai Gopal who had been Singh's associates in the HSRA. On 10 July 1930, the tribunal decided to press charges against only 15 of the 18 accused and allowed their petitions to be taken up for hearing the next day. The trial ended on 30 September 1930. The three accused, whose charges were withdrawn, included Dutt who had already been given a life sentence in the Assembly bomb case.

जाट आर्य हैं

– जयपाल सिंह पुनियां, एम.ए. इतिहास,
वन मंडल अधिकारी (सेवानिवृत)

जट्ट शब्द समूह के लिए प्रयोग होता हैं। जट्ट शब्द का दूसरा अर्थ है कि जिसमें बिखरी हुई ताकतें इक्कट्ठी हो जायें। जट्ट शब्द का दूसरा अर्थ है जाट। इन दोनों का अर्थ एक ही है। यह जाट संघ आर्य राजवंशों व क्षत्रियों के संगठन से बने हैं जो कि आर्य थे। इसके कुछ उदाहरण उन जाट गोत्रों के दिए गए हैं जो कि चन्द्रवंशी आर्य चक्रवर्ती सम्राट ययाति के वंशज हैं और कुछ सूर्यवंशी (ययातिवंशी) है। जाट केवल एक हिन्दू जाति ही नहीं, वास्तव में एक नस्ल है। जातियों की पहचान के लिए अंग्रेज विशेषज्ञों ने कई साधन निकाले जैसे शारीरिक बनावट और भाषा आदि। शरीर शास्त्र के अनुसार विशेषज्ञों ने मनुष्य जाति को पांच भागों में बांटा है जैसे :– 1. आर्य 2. मंगोलियन 3. हब्शी 4 मलय (मलायापन) 5. अमेरिकन रंग के हिसाब से गौरे, काले, बादामी, लाल, पीली, काली आंखें, लम्बी बांहें व ऊंचे कद काठ के होते हैं। "हिस्ट्री ऑफ आर्यन रूल इन इन्डिया" नामक ग्रन्थ में लिखा है कि मानव तत्वविज्ञान की खोज से सिद्ध हुआ है कि भारतीय आर्य जाति, जिसको आर्यन साहित्य में लम्बे कद काठ, सुन्दर चेहरा, पतली लम्बी नाक, चौड़े कन्धे, लम्बी भुजाओं शेर की तरह पतली कमर, लम्बी टांगों वाली जाति बतलाया है। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, कश्मीर आदि प्रदेशों में यह नस्ल पाई जाति है। लम्बे कद काठ, सुन्दर चेहरा, गोरा रंग या गेहूंआ रंग, काले बाल, ऊंची गर्दन काली आंखें, पतली व लम्बी नाक आदि से भली भांति पहचाने जा सकते हैं क्योंकि जाट व आर्यन युवक का शरीर काफी फुर्तिला और गठीला होता है। इस तरह के लक्षणों को देखकर ही मि. नेसफिल्ड ने बलशाली शब्दों में कहा कि रंग रूप यदि कुछ समझे जाने वाली बात हैं तो जाट आर्यो के इलावा और कुछ नहीं हो सकते। वास्तविकता भी यही हैं कि वैदिक आर्यों के वंशज जाटों के लक्षण आज के जाटों में भी पाए जाते हैं।

सन् 1901 ई० की जनगणना की रिपोर्ट पेज 500 पर सर एच.रिजले साहब ने स्पष्ट स्वीकार किया है कि जाट

शारीरिक बनावट के आधार पर आर्य हैं। कुछ देसी तथा विदेशी इतिहासकारों ने शारीरिक गठन, स्वभाव, रहन–सहन, आचार–विचार, रिती–रिवाज, परम्पराऐं, प्रशासनिक प्रबन्ध राजनैतिक विकास पर विचार आदि उसके इलावा साहसिक प्रवृति और भूमि उत्पादन अनुसन्धान को अपना बिन्दु मानकर भारतीय जाटों को यूरोप के प्राचीन आर्य, गेटी, मैसेगटाई (महानजाट) यूचि, यति, जतिका आदि जातियों के साथ संबंध बताया है। भारतीय सीमाओं का भौगोलिक अंग होने के बाद भी भारतीय आर्य जाति के जाटों के शकद्वीप (सिन्धू प्रदेश) में जाकर बसने के कारण ही विदेशी शक, भारतीय शक अथवा इन्डोसिथियन प्रभावित करने का प्रयास किया है। भारतीय सीमान्त प्रदेश कन्धार, गजनी और यदु की पहाड़ियों को निकास का केन्द्र बिन्दू माना है। लेकिन जाट आर्य पुत्र भारत की ही सन्तान है। ब्रजमंडल और दोनों मालवा के मूल निवासी है। सम्पूर्ण जाट अपने आपको एक स्तर से यदूवंशी (चन्द्रवंशी) संतान मानते हैं जब कि इनमें सूर्यवंशी और नागवंशी शाखाओं के जाट कुटुम्ब कबिलों को भी अगर मिला लिया जाए तो हमें गहन अध्ययन से पता चलेगा कि मध्य एशिया, अरब और यूरोप में पाये जाने वाले आर्यन जाट भारतवर्ष से ही पलायन करके गए हैं क्योंकि सिन्धू घाटी की सभ्यता ही सबसे पुरानी वैदिक सभ्यताएं हैं मैसोपोटामिया और मिश्र की सभ्यता तो सिन्धू घाटी की सभ्यता से हजारो वर्ष बाद पनपी हैं।

कर्नल जैम्स टॉड का मत है कि जाट इन्डोसिथियन कुल के हैं जो कि ईसा से एक सौ वर्ष पूर्व अपने निवास स्थान ऑक्सस घाटी से पंजाब में चले गए थे। कनिघम, इब्बेटसन और विसेन्ट, स्मिथ ने इनका समर्थन किया है। जैक्सन और कैम्पबैल ने इनका संबंध कुषाण और यूचि से बताया है। डॉ० ट्रम्प और बीम्स ने शारीरिक तथा भाषा दोनों दृष्टि से जाटों को शुद्ध इन्डो आर्यन वंशज होने का दावा किया है। मिलर ने भी इनका ही समर्थन किया है। इसलिए बीम्स ने पृष्ट 128 पर कहा है कि जाट शूरसेन की पुरानी सीमाओं को छोड़कर कभी बाहर नहीं गए।

कानूनगो के अनुसार शारीरिक विशेषताओं, भाषा, चरित्र आदि से जाट वैदिक आर्यों के श्रेष्ठतम प्रतिनिधि हैं। इतिहास में जाट काफी निर्भिक लड़ाकू के रूप में जाने जाते हैं। ये मुख्यतया कृषक हैं। यही कारण है कि इस जाति ने सिन्ध, पंजाब, मध्यप्रदेश की मालवा, राजस्थान, गंगा का दोआब के पश्चिमी हिस्सों में काफी निर्माण कार्य किया। डॉ० इरविन के अनुसार 'जाट' अपने गांव की सरकार में राजपूतों की बजाय अधिक प्रजातांत्रिक होते हैं। वंशानुगत अधिकार के प्रति उनका लगाव कम होकर लोगों द्वारा चूने हुए मुखिया को प्राथमिकता देते हैं। जो कि आर्यो की रिती के अनुसार है मजबूत सामाजिक बन्धन तथा प्रशासन के प्रजातान्त्रिक विचारों की अटूट परम्परा के साथ–साथ अपने भाई की विधवा के साथ शादी का रिवाज और नियोग की मान्यता जाटों की कुछ ऐसी सामाजिक विशेषताएं है जो उन्हें हिन्दुओं के किसी उच्च जाति की अपेक्षा वैदिक आर्य होने के सच्चे प्रतिनिधि होने के दावो को सिद्ध करती है।

कर्नल टॉड ने सकन्दनाभ में जाटों की बस्तीयों का वर्णन किया है। किन्तु जिस समय सकन्दनाभ बस्तीयों का वर्णन किया है, उससे कई शताब्दी पहले भारत में जाटों का अस्तित्व पाया जाता है। जाट भारत से ही अरब, यूरोप, मध्य एशिया व पूर्वी एशिया सभी जगह भारत से ही गए है।

श्री चिन्तमणि विनायक वैघ मानते हैं कि किसी भी विदेशी इतिहास में ऐसा कहीं नहीं लिखा कि जाट किस देश से भारत में आए।

पं. इन्द्र, वेदावाचस्पति "मुगल साम्राज्य का उदय और कारण" नामक इतिहास पुस्तक में यही बात लिखते हैं कि "जब से जाटों का वर्णन मिलता है वह भारतीय ही हैं और यदि जाटों के भारत से बाहर कहीं भी निशान मिलते है तो वह भी भारत से ही गए हुए है।" (जाट इति. पृ. 65–66 डॉ. देशराज)

जाट हुणों के संबंन्धी नहीं बल्कि शत्रु थे जाटों ने हुणों का सामना किया और उनको परास्त किया। अतः जाट पंजाब के ही निवासी थे। मंदसौर के शिलालेख वाला यशोधर्मन, जिसने हुणो को लगातार परास्त किया था वह विर्क गोत्र का जाट था। जाट मालवा में भी उस समय से पहले ही सिन्ध की ही तरह पहुंच चुके थे। जाट हमेशा हुणों के विरोधी रहे हैं और जाट भारत में सबसे शुद्ध आर्य है तथा आर्यो का बाहर से आकर भारत में बसने के कोई भी प्रमाण नहीं मिलते। जाटों का भारत में आने का न तो कोई विदेशी इतिहासकारो का कथन है और न ही जाटों की अपनी ही कोई दन्त कथा है। इसके इलावा न ही कोई ऐतिहासिक व शिलालेख के प्रमाण हैं। जो कुछ थोड़ा बहुत युरोपियन इतिहासकार जाटों को सिथियन और विदेशी साबित करने की असफल कोशिश करते हैं में उनका ये केवल भ्रम मात्र ही मानता हूँ। जाट न हुणो, शको व न सिंथियनों की औलाद हैं, बल्कि वे विशुद्ध आर्य हैं। सिंथिया में भी जाट भारत से ही गए थे।

जाट ने तो सिंथियन हैं, न जथरा हैं और न ही मध्य एशिया के जथरा की पहाड़ियों से आए हैं किन्तु जाट तो सच्चे भारत माता के पुत्र हैं जिन्होंने पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, यु.पी. व मध्य प्रदेश का मालवा, गुजरात, महाराष्ट्र आदि को अपने पुरूखों का ही घर बतलाया हैं। जाटों से इस बात का स्वीकार करवाना कि वे पुराने यदुवंशीयों की संतान नहीं हैं बहुत मुश्किल हैं।

अब मानवतल अनुसंधान शास्त्र के अनुसार जाटों के आर्य होने के कुछ प्रमाण निम्न प्रकार से दिए जाते है।

मानवतत्व विज्ञान में की गई एक खोज के अनुसार भारतीय आर्य जाट जाति के बारे में कहा गया है कि हिन्दु वैदिक ग्रन्थों में लम्बे कद–काठ सून्दर चेहरा, पतली लम्बी नाक, चौड़े कन्धे, लम्बी भुजाएं शेर की सी कमर, हिरण जैसे पतली टांगों वाली, गोरे व गेहूं रंग की जाति बतलाया हैं जैसे कि यह प्राचीन समय में थी। आधुनिक भारत पंजाब, हरियाणा, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, यू.पी. और कश्मीर में जाट, और राजपूतो को क्षत्रिय जातियों के नाम से पुकारा जाता है। इसके अलावा पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान व अरब में 630 ई0 से पहले सभी जाट थे जिन्होंने 630 ई0 के बाद इस्लाम धर्म कबूल कर लिया था। प्राचीन आर्य जाति भारत की ही निवासी थी। इन्होंने ही विदेशों में जैसे अरब युरोप, मध्य एशिया व पूर्व एशिया में जाकर राज्य स्थापित किए और उन्हीं में से कुछ दोबारा भारत में आकर बस गए क्योंकि इनकी शारीरिक बनावट आपस में मेल खाती है।

भाषा विज्ञान के अनुसार जातियों को पहचानने का जो तरीका हैं उसके अनुसार जाट आर्य है। इसके प्रमाण मि. सर. हैनरी, एम. इलियट के सी.बी. "डिस्ट्रब्यूसन ऑफ दी रेसेज ऑफ दी नोर्थ वैसटर्न प्राविंशेज ऑफ इण्डिया" में लिखते हैं कि बहुत समय हुआ कि मैंने कराची से पेशावर तक यात्रा करके अनुभव किया कि जाट लोग कुछ खास परिस्थितियों के इलावा अन्य शेष जातियों से अधिक अलग नहीं हैं। भाषा से जो कारण बताया गया है वह जाटों और आर्यों की भाषा एक ही है क्योंकि जाट विशुद्ध रूप से आर्य ही हैं क्योंकि आर्य जाटों के इलावा बहुत कम संख्या में हैं। यदि सिथियन होते तो उनकी सिथियन भाषा कहा चली गई। ऐसे कैसे हो सकता है कि वे अब आर्य भाषा को जो कि हिन्दी की ही एक शाखा है, उसको बोलते हैं, जिसे खड़ी भाषा यानि हरियाणवी भी कहते हैं। ये हरियाणा के जाटों यानि हरियाणवी आर्यों की भाषा है। इसे वे सदियों से बोलते चले आए हैं। पेशावर से डेरा जाट और सुलेमान पर्वतमाला के पार कच्छ गोंडवाना में यह भाषा हिन्द की या जाट की भाषा के नाम से प्रसिद्ध है। शारीरिक बनावट व भाषा ऐसी चीज हैं कि उनको दरकिनार नहीं किया जा सकता। (जाट इति. पृ. 62 देशराज)

शरीर की बनावट व भाषा इन दो पहचानों से सभी जातियों का पता चल जाता है इसके इलावा धार्मिक भावना व रिती रिवाजों से भी हर जाति का पता चल जाता है कि यह किस नस्ल व देश की है। इस सिद्धान्त के अनुसार जाट आर्य नस्ल से ही संबंधित है। अतः धार्मिक भावनायें और रिती–रिवाज उन्हें वैदिक आर्यों का सच्चा उत्तराधिकारी सिद्ध करती है। यह निर्विवाद सही बात है कि "जाट विशुद्ध रूप से आर्य है"। जाट अपनी वीरता से सारे संसार में प्रसिद्ध रहे हैं क्योंकि प्रथम व द्वितीस विश्वयुद्ध में अंग्रेजों ने जाटों की वीरता को भली–भांति देखा व परखा था।

कारनामा राजपूत का लेखक श्री नजमुल रामपुरी लिखता है कि जाट जाति के अभ्यास, स्वभाव, रिति–रिवाज, रहन–सहन से पता चलता है कि वे सिन्ध नदी के पूर्व–पश्चिम में दोनों तरफ पाये जाते हैं। यदू/यादवों से ही उनका निकास सम्भव होता है। जाट जाति को कृष्णवंशी होने का गौरव प्राप्त है। इसी तरह सुख संपत्ति राय जी भंडारी ने अपने "भारत के देशी राज्य" नामक महाग्रन्थ में लिखा है कि "जाट आर्य वंश के है और प्राचीन काल में भारत में उनके निवासी होने के एतिहासिक प्रमाणिक उल्लेख भी मिलते हैं। यह भी पता चलता है कि जाट क्षत्रिय और उच्चकुलीन माने जाते थे क्योंकि जाट क्षत्रिय थे और क्षत्रियों को समाज में उच्च कुलीन माना जाता है और जाट आज भी उच्च कुलीन ही है क्योंकि जाटों को समाज में आज भी अन्नदाता कहा जाता है और अन्नदाता का समाज में 'प्राचीन वैदिक काल से ऊंचा दर्जा रहा है।'

आर्य लोग सामाजिक मामलों में अधिक उदार (श्रेष्ट) होने के कारण गत शताब्दीयों में पौराणिक मनोवादियों की आंखों में खटकने लगे और जाटों को तुच्छ घोषित कराने का प्रयास भी चलता रहा लेकिन यह कोशिश असफल ही रही। इसके अलावा अनेक अरबी इतिहासकारों ने भी कहा कि जाट ही भारत वर्ष के असल आर्य है क्योंकि ये इतिहासकार तो सारे भारत वर्ष को ही आर्य जाटों का देश मानते थे। इलियट साहब ने अपनी पुस्तक "हिस्ट्री ऑफ इण्डिया" अरब इतिहासकारों का हवाला देकर इसी बात को दोहराया है कि इसके अलावा डा. ट्रम्प, बीम्स, सर रिजले, सर जेम्स, ग्रियर्सन, भाई परमानन्द, यदुनाथ सरकार, प्रो. इन्द्र, स्वर्गीय राजा लक्ष्मण सिंह, कालिका रंजन कानूनगो योगेन्द्र पाल शास्त्री, कैप्टन दलीप सिंह अहलावत, ले. रामस्वरूप जून, यू. एन. शर्मा, डॉ. देशराज, पं. लेखराम आदि सुप्रसिद्ध इतिहासकारों और विद्धानों ने एक स्वर में कहा है कि जाट नस्ल से आर्य हैं। उपरोक्त उदाहरणों से यह भली भांति सिद्ध हो जाता है कि जाट न तो शको, न सिंथियनों और ना ही हुणों की सन्तान है। जाट विशुद्ध रूप से आर्य है। इतिहास इस बात का साक्षी हैं कि जब हुणों शको व सिंथियनों का कहीं नामों निशान भी नहीं था, जाट उस समय भी भारतवर्ष पर राज करते थे।

जाट इतिहास न लिखा जाने की कमी ने जाटों को उनके उच्च स्थानों से गिराने में बहुत सहायता दी है। मथूरा मेमायर्स के लेखक मि. ग्राउस ने जाटों को अपना इतिहास न लिखने पर बहुत फटकार लगाई। वास्तव में उनकी कोई एतिहासिक पुस्तक न पाकर दूसरे लोगों से जैसा उन्होंने

सुना था या बताया गया, वे लिखने को विवश हुए। यह सिद्ध करना कुछ भी कठिन नहीं है कि जाट इंडोआर्यन हैं जिन्हें किसी इतिहासकार व गजेटियर के संपादक ने इंडोसिंथियन लिख दिया क्योंकि वे जाटों के भारतीय इतिहास से अनभिज्ञ थे। 90 प्रतिशत इतिहासकारों ने मुक्त कंठ से जाटों को प्राचीन आर्यों के विशुद्ध वंशज बताया है। जाटों ने इस बात के विरूद्ध न तो आवाज उठाई कि कोई उनके विरूद्ध कौन कैसा प्रचार कर रहा है। न ही कोई प्रतिवाद किया। फिर भी निष्पक्ष विद्धान इतिहासकारों को यह स्पष्ट रूप से मानना पड़ा कि जाट आर्य हैं और प्राचीन आर्यों के वास्तविक उत्तराधिकारी हैं। जाट इतिहास पेज 67–68 डॉ. देशराज व लेखक भी इससे सहमत है।

डॉ. ट्रिम्प कहते हैं कि "सिन्ध की आदि निवासी जाति जाट है।" इसमें कोई संशय नहीं हैं कि ये जाट इस देश के निवासी दिखलाई देते हैं, वे विशुद्ध आर्य वंश से ही हैं"।

श्री कुद्रयात्सेन का मत है कि जनगणना की सूचना, दूसरे सरकारी पत्र प्रमाण, नृव्यविद्या की जांच (इबस्टन, क्रुक, रोज, वर्तमान ग्रन्थकार) परम्परा से जाटों को एक अलग कुल या कुलों – वंशों का संघ (गण) मानते है"। कुछ लेखकों का कहना है कि भारत पर सिंथियनों के आक्रमण से काफी समय पहले जाट लोग सिंध प्रान्त में आबाद थे और उनका संबंध महाभारत के युद्धों और योद्धाओं से था।

जहां भी रक्षा का प्रश्न उठता है, बलिदान की आवश्यकता होती हैं वहां इन जाट वीरों को सबसे पहले याद किया जाता है। महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी ने जाटों की गौरवपूर्ण बल शक्ति पर भारतीयों का ध्यान आकर्षित करते हुए अपने भाषण में कहा था कि "जाट भारतीय राष्ट्र की रीढ़ है। भारत को इस साहसी वीर जाति से बहुत बड़ी आशाएं हैं"।

अरब यात्री अनुलारिह मुहम्मद बिन अहमद अलबुरूनी ने "तहकीकए हिन्द" में भगवान श्री कृष्ण को जाट लिखा है। स्पष्ट है जाट, संघ क नाम से जाट, किन्तु जाति के नाम से आर्य हैं।

जाटस दी एनशियन्ट रूलरज लेखक डॉ. भीम सिंह दहिया ने पृ. 81 पर भविष्य–पुराण का हवाला देकर लिखा है कि "जाट आर्य है" आगे डॉ. दहिया साहब ने पृ. 97–98 पर जाटों के बारे में लिखा है कि "प्रसिद्ध इतिहासकारों के शब्दों में वर्तमान समय के जाट, शारीरिक बनावट, भाषा, चरित्र, बुद्धि शासन की योग्यता तथा सामाजिक व्यवस्था की दृष्टि से निसन्देह प्राचीन वैदिक आर्यों के उच्चतर प्रतिनिधि हैं। बनिस्बत (तुलना में) हिन्दू जाति के उन तीन ऊंचे कुल के किसी भी सदस्य से, जिन्होंने अवश्य ही अपना मौलिक चरित्र बहुत कुछ खो दिया है"।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जाटों को विशुद्ध रूप से आर्य माना है। स्वामी जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश एकादश पृ. 227–28 पर जाट जी और पोप जी की एक घटना का उदाहरण देकर जाट जी का बड़ा सम्मान किया है। क्योंकि पोप जी की पोपलीला का जाट द्वारा भण्डाफोड़ किया गया था, तो स्वामी जी ने जाट को बड़ा सम्मान दिया था। स्वामी जी पोप लिला के बहुत ही खिलाफ थे। उन्होंने पोप लिला के खिलाफ काफी प्रचार किया था जिससे सामाजिक कुरितियों को काफी हद तक कम करने का स्वामी जी को बल मिला था।

जाट धर्म, भाषा, संस्कृति सभ्यता, शासन पद्धति के आधार पर पूर्ण रूप से वैदिक धर्मी आर्य हैं। एक ईश्वर में विश्वास, गुण कर्म स्वभाव आधार पर छोटा बड़ा समझना, जगत जननी स्त्री जाति का पूर्ण सम्मान करना, प्रान्तीय भेदभाव से दूर रहना, विद्धानों का सम्मान करना, युद्ध व कृषि के लिए अपना सबकुछ न्यौछावर करना, इसको संक्षेप में "सम्मान के साथ जीना और सम्मान के साथ मरना" जाटों की विशेषताएं रही है जो कि ये सभी विशेषताएं आर्यों में ही पाई जाती हैं। जाट–समाज–धर्म सुधार में सबसे आगे रहते हैं। इनकी समाज, मानव–समाज सेवा के गुणों के कारण ही इन्हें भिन्न–भिन्न स्थानों पर चौधरी, ठाकुर पटेल, सरदार प्रधान, मिर्घा, फौजदार, मलिक/मालिक आदिनामों से सम्मान के साथ सम्बोधित किया जाता है। ये उपलब्धियां जाटों का क्षत्रिय होना भी सिद्ध करती हैं।

जाट एक ईश्वर को ही मानते हैं। वेदों के आधार पर ईश्वर के एक होने के लिए सम्पूर्ण आर्य साहित्य ने बल दिया है। महात्मा बुद्ध ने जब ढकोसलों और पाखण्डों के विरूद्ध समाज में घोषणा की तो सभी जाट संघों ने बौध धर्म अपना लिया था और जितने भी प्राचीन काल में शक्तिशाली सम्राट हुए, जैसे चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक महान, सम्राट विक्रमादित्य, सम्राट कनिष्क, समुन्द्रगुप्त, चन्द्रगुप्त(2), हर्षवर्धन, सम्राट अनंगपाल तोमर आदि सभी जाट शासकों ने बौध धर्म अपना लिया था क्योंकि महात्मा बुद्ध भी स्वयं जाट थे। जब अरब के मरूस्थल में उठते हुए "लाइलाह इलिल्लाह खुदा एक ही है" के नारे को पश्चिमी भारत के सीमान्त प्रदेश की एक ईश्वर विश्वासी जाट जनता ने सुना तो उधर सामुहिक रूप से मुसलमान होकर एक खुदा की इबादत करने लगे। शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट आदि के प्रयत्नों से जब नवीन हिन्दु धर्म की स्थापना की गई तब जाट उन पौराणिको की ओर आकर्षित न होकर उनके फंदें में न फंसे। उनके विचारों में एक ईश्वरवाद के विपरित अस्थिरता आना ही चाहती थी कि ऋषिवर श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपना दिव्य सन्देश सुनाकर उन्हें शुद्ध वैदिक मत का मार्ग दिखाया। हिन्दु जाटों ने उनके उपदेशों के सामने

आत्म समर्पण कर दिया। आज परिणाम यह है कि हिन्दू कहलाने वाले सम्पूर्ण जाट वैदिक मतानुयायी आर्य समाजी हैं। वैसे तो आज के समाज में काफी कुरितियों के कारण आर्य समाज दम तोड़ने के कगार पर खड़ा है, क्योंकि जाटों में ही आर्य समाज का भाव देखा गया हैं क्योंकि जाट ही सच्चे मायनों में वैदिक आर्यों की सन्तान हैं। इसी प्रकार गुरू नानक जी ने भी जब सिक्ख सम्प्रदाय की नीवं डाली तो पंजाब के जाटों ने ही सर्वथा सामुहिक रूप से सिक्ख धर्म को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार से समस्त भारत के जाट वैदिक धर्मी रूप में एक ही ईश्वर को मानते थे और उसी का ध्यान करते थे। जो जाटों की अपनी निराली विशेषता है।

गुण कर्मानुसार छोटा बड़ा मानना – आर्य संस्कृति की प्रबल पोषक वर्ण व्यस्था का खात्मा होने पर वंशों की ऊंच–नीच की इतनी प्रबलता हुई कि वर्ण से नीचे जाति–जाति में पारस्परिक घृणा के भाव घर कर गए। आखिरकार यह हुआ कि राम के वंशज, कृष्ण के वंशज दूसरो को तुच्छ मानने लगे और समाज में यह जहर फैलता ही चला गया। उनकी ऊंच–नीच का यह परिणाम है कि प्रयत्न किए जाने पर भी आज तक कभी भी ब्राह्मणों का कोई संगठन सम्पन्न नहीं हुआ। अहिरों में नंदवंशी और यादव, गुजरों में बडगुजर, मराठों में भौंसले आदि सभी अपने आपको श्रेष्ठ मानने लगे। जाटों में सबसे अधिक लगभग 5000 गोत्र हैं। जो कि वैदिक आर्यों की ही परम्परा रही है।

स्त्रियों को समान अधिकार भी प्राचीन समय से ही जाटों में ही दिए जाते है जो कि वैदिक आर्यों की ही परम्परा रही है। दूसरी जातियों में तो विधवा को अभिषाप माना जाता था लेकिन जाटों में ऐसा नहीं है वैदिक काल से ही विधवा का विवाह दूसरे भाईयों से करवा दिया जाता था, यह प्रथा वैदिक काल से ही आर्यों की प्रथा रही है। यदि किसी अन्य जाति की लड़की का विवाह जाटों में होता है तो उसे वही जाटनी वाला सम्मान मिलता है क्योंकि जाटों की एक कहावत है कि जाट के घर आई और जाटनी कहलाई।

लोकश्रुति के अनुसार जाट जाति अपने जैसे ही वीर पुत्रों को जन्म देती हैं। इस प्रकार के सभी सम्मान से जाट जाति क्षत्रियों में वह पारसमयी है जो लोहे को सोना बनाने की क्षमता रखती है। जाटों ने घर, बाहर सभी क्षेत्रों में स्त्रियों को समानता प्रदान की हुई है। अपने भाई की विधवा से विवाह करना जाटों की प्रथा वैदिक शास्त्रों के भी अनुकूल है जो कि जाटों का आर्य होने का मजबूत प्रमाण दर्शाता है। चौथी शताब्दी में सम्राट चन्द्रगुप्त(2) ने अपने भाई समुन्द्रगुप्त की विधवा से ही विवाह कर लिया था। वे धारण गोत्र के जाट थे। गुप्तकाल के सभी शासक धारण गोत्र के जाट शासक थे। इनके समय में भारतवर्ष को संसार में सोने की चिड़ियां कहलाने का गौरव प्राप्त हुआ था। इनकी राजधानी मगध थी। 1300 ई. में मालदेव राठौर ने अपनी विधवा बेटी की शादी राणा हमीर देव मेवाड़ शासक से कर दी थी। आजकल हिन्दुओं की अन्य जातियों ने भी जाटों के देखा–देखी विधवा विवाह करवाना शुरू कर दिया।

प्राचीन आर्य मांस नहीं खाते थे और जाटों में भी मांस न खाने की परम्परा अब तक आ रही है। समय के फेर में अब हिन्दूओं में बहुत सी जातियों में मास खाने लग गए हैं। लेकिन जाटों में आज भी बहुत ही कम लोग मांस खाते है क्योंकि ये प्राचीन आर्यों की ही संतान है।

भेदभाव से परे रहना। बौध काल के पश्चात नवीन हिन्दु धर्म के समय हिन्दुओं की सभी जातियों में ऊँच–नीच का भेदभाव प्रबल रूप से पैदा हो गया। प्राचीन भारत की सभी विशेषताओं की सच्ची स्मारक जाट जाति में आज भी अखिल भारतीय अटूट संबंध बना हुआ है। केवल जाट कह देने से ही सारे भारतवर्ष में बिना भेदभाव के खानपान और रोटी बेटी का संबंध आज भी विद्यमान हैं सामाजिक संगठन के प्रेमभाव से सभी स्थानों के हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई सभी जाट आपस में एक है। वंशागत, ऊँच–नीच से दूर यदि कोई संगठन में आदर जाती है, तो वह केवल जाट ही है जोकि केवल वैदिक आर्यों के ही गुण रखने वाली जाति है।

जाटों का शारीरिक गठन, धर्म, समाज, विवाह, पंचायत और भाषा के विषय में सभी प्रकार से जाटों और आर्यों में कोई भेद नहीं हैं क्योंकि जाट ही वैदिक आर्यों की संतान हैं। विवाह शादी करते समय जाटों में अपना, मां का, दादी व मौसी, पिता की दूसरी व्याहता आदि का गोत्र छोड़ते हैं। यह विशेषता जाटों के आर्य नस्ल होने का दृढ़ प्रमाण है। जाटों के इलावा दूसरी जातियों में यह प्रथा नाममात्र ही है। इसके इलावा कई गोत्रों में भाईचारा होने पर भी आपस में विवाह शादी के समय गोत्र छोड़ते है जैसे दलाल, देसवाल, मान, सिहाग, अहलावत, ओहलाण, पेहलाण, दुहन और मलिक का भी भाईचारा है। जाट तो अपने गांव की सीमा के साथ लगते गांव में शादी नहीं करते क्योंकि ये गांव तो भाईचारे में ही आ जाते हैं। कई हिन्दु जातियाँ केवल अपना ही गोत्र छोड़ती हैं।

उपरोक्त सभी उदाहरणों से स्वतः ही ज्ञात हो जाता है कि केवल जाट ही तो आर्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने जब दोबारा आर्य समाज का प्रचार किया तो उनके साथ इस कार्य में केवल जाटों ने ही कन्धे से कन्धा मिलाकर कार्य किया। प्राचीन वैदिक काल से आज तक जाटों ने ही आर्य विचारों की पालना की है अतः जाट ही सच्चे आर्य है। इनके इलावा और किसी जाति धर्म में जाटों से बड़ा आर्य कोई भी नहीं हो सकता।

किसान-काश्तकार मसीहा-दीन बन्धु चौ0 छोटू राम

– बी.एस. गिल
सचिव, जाट सभा

किसानों, मजदूरों एवं विशेषतौर से संयुक्त पंजाब के ग्रामीण समाज के मसीहा दीन बन्धु चौ० छोटू राम का जन्म वैसे तो 24 नवम्बर 1881 को रोहतक (हरियाणा) के छोटे से गांव गढ़ी सांपला में एक गरीब किसान सुखीराम के घर में हुआ लेकिन बसन्त पंचमी के त्योहार के अवसर पर एक दिन लाहौर में एक किसान सम्मेलन के दौरान उन्होने अपनी प्रबल इच्छा जाहिर की कि किसानों की खुशहाली एवं फसलों की खुशबू से परिपूर्ण बसंत पंचमी का पर्व ही मेरे जन्म दिवस के रूप में मनाया जाये। अतः इस महान शख्सियत की यह प्रबल इच्छा ही उनके किसान–मजदूर वर्ग के प्रति गहरे लगाव को जाहिर करती है। इसके साथ ही अपनी बौद्धिक कुशलता के बलबूते पर सेंट स्टीफन कालेज दिल्ली से स्नातक की डिग्री हासिल करना और सम्पूर्ण विद्यार्थी जीवन में वजीफे द्वारा कानून में स्नातक तक की डिग्री प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण करना उनकी उच्च स्तरीय बुद्धिमता को प्रमाणित करता है।

देश को साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार एवं भाई–भतीजावाद जैसी कुरीतियों से बचाने तथा करोड़ों किसानों व मजदूरों को आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने हेतू उन्होने अपने वकालत के पेशे को ठुकरा कर सक्रिय राजनीति में प्रवेश किया और वर्ष 1916 में रोहतक जिले के कांग्रेस अध्यक्ष चुने गये, लेकिन मात्र चार वर्ष बाद कलकता अधिवेशन के अन्दर वर्ष 1920 में ही कांग्रेस द्वारा चलाये गये असहयोग आंदोलन से अपनी असहमति जताते हुए कांग्रेस से त्याग पत्र दे दिया। अतः वर्ष 1923 में सर फजले हुसैन के साथ मिलकर किसान, मजदूर व छोटे काश्तकारों के कल्याण को सर्वोपरि रखते हुए नैशनल यूनियननिष्ट पार्टी का गठन किया। यह पार्टी धर्म निरपेक्षता के आधार पर गठित की गई। वर्ष 1923 में पंजाब में विधान सभा चुनाव जीतने के बाद दीन बन्धु सर छोटू राम कृषि मंत्री बने और 26 दिसम्बर 1926 तक मंत्री रहे। इस थोड़े से समय में ही उन्होने जनहित में अनेकों कार्य किये जिनमें किसानों को साहूकारों व सूदखोरों के प्रभाव से मुक्ति दिलाने के लिए कई लाभकारी कानून पारित करवाये गये जैसा कि 'पंजाब कर्जा रहित अधिनियम 1934' जिसके अनुसार अगर किसी काश्तकार ने कर्ज ली गई राशी को दोगुना या अधिक का भुगतान कर दिया है तो उसको कर्ज की राशी से स्वतः मुक्ति मिल जायेगी।

'पंजाब कर्जदार सुरक्षा अधिनियम 1936' जिसके अनुसार पूर्व मालिक के कर्ज के लिए उसके वारिस की जमीन के हस्तांतरण पर रोक लगी और खड़ी फसल व वृक्षों को बेचने व कुर्की करने पर रोक लगी। इसी प्रकार 'पंजाब राजस्व कानून 1928', 'पंजाब कर्जदाता पंजीकरण अधिनियम 1938' व 'रहनशुदा जमीनों की बहाली का अधिनियम 1938' भी पारित किये गये। इन विधेयकों का प्रभावशाली क्रियान्वयन कर्जा पीड़ित किसानों के लिए वरदान साबित हुआ जिनके तहत किसान के मूलभूत कृषि यंत्र व साधन– हल, बैल आदि की किसी भी अवस्था में कुर्की नहीं की जा सकती। राष्ट्रीय योजनाओं में भाखड़ा नग्गल डैम की प्रस्तावना का स्वरूप और उसका क्रियान्वयन चौ0 छोटूराम की सबसे बड़ी देन है। उन्होने इस योजना के निर्माण के लिए मार्च 1933 में पंजाब लेजीस्लेटिव कांउसिल में प्रस्ताव पास करवाकर इस परियोजना के क्रियान्वयन के लिए काफी बाधाओं के बावजूद अन्तिम समय तक निरन्तर प्रयास जारी रखे और अन्त में 8 जनवरी 1945 को लम्बे संघर्ष के बाद बिस्तर से ही इस परियोजना को लागू करने के आदेश करने में सफल हुए। इसके बाद चौ0 साहब काफी प्रसन्न हुए और कहने लगे कि आज मैनें अपनी सबसे प्यारी भाखड़ा डैम योजना पूरी करने के लिए हस्ताक्षर कर दिये हैं।

चौ0 साहब की धर्मनिरपेक्षता व राष्ट्रवादी पार्टी सदैव राष्ट्र विरोधी तत्वों को समाप्त करने का प्रयास करती रही। वे हिन्दू–मुस्लिम एकता के प्रबल पक्षधार रहे हैं। जब मुस्लिम लीग पंजाब में युनियननिष्ट पार्टी को खत्म करने का प्रयास कर रही थी और देश विरोधी तत्वों द्वारा मजहब के नाम पर देश को बांटने की कोशिश की जा रही थी उस समय 1944 में चौ0 छोटूराम ने मुस्लिम बाहुल क्षेत्र लायलपुर में एक विशाल रैली आयोजित की जिसमें डिप्टी कमीशनर व मुस्लमान मुल्लाओं के विरोध के बावजूद भी पचास हजार लोगों ने भाग लिया और राष्ट्र विरोधी ताकतों के इरादों को नकार दिया। उन्होंने 15 अगस्त 1944 को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को पत्र लिखकर मोहम्मद अली जिन्हा के धार्मिक कट्टरपंथी इरादों से अवगत कराया। इसी प्रकार 24 नवंबर 1944 को एक विशाल जनसभा के दौरान किसान राज और आजाद भारत की कल्पना पर लगातार 2 घंटे तक किसान–काश्तकार को उसकी ताकत

का अहसास कराते हुये हिन्दु, सिख, इसाई, मुसलमान को आपसी सामाजिक भाइचारे व एकता के लिये प्रेरित किया। लेकिन अफसोस है कि चौ0 साहब ज्यादा समय तक इस प्रकार की ताकतों का सामना करने के लिए जीवित नहीं रहे और राष्ट्र विरोधी ताकतें अलग इस्लामिक राज्य–पाकिस्तान का गठन कराने में सफल हो गईं। जाहिर है कि अगर चौ0 साहब जिन्दा होते तो देश का बटवांरा न हो पाता। चौ0 साहब बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कहते थे "हम मौत पसन्द करते हैं, विभाजन नहीं"। वे मजहब के नाम पर बने इस नये इस्लामिक राज्य–पाकिस्तान को बंगाल व पंजाब के हिन्दुओं तथा सिक्खों के लिए अत्याचार का क्षेत्र समझते थे जिसका असली स्वरूप आज सारे राष्ट्र को नुकसान पहुंचा रहा है।

उन्होंने जाट गजटीयर नाम से पत्रिका प्रकाशित करके किसान–मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए शिक्षा अभियान चलाकर समाज में उनकी दिक्कतों को उजागर किया। वे गरीब व जरूरतमंद बच्चों को अपनी जेब से आर्थिक सहायता तक प्रदान कर देते थे और जन साधारण तक शिक्षा का प्रसार करने के लिए गुरूकुल व जाट संस्थाओं की स्थापना की। उनके द्वारा स्थापित किये गये सर छोटू राम शिक्षा कोष से समाज के काफी लोगों ने सहायता प्राप्त की, जिनमें चौ0 चान्दराम भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री व पाकिस्तान के एक मात्र नोबेल पुरूस्कार विजेता डा0 अब्दुस कलाम शामिल हैं। अब्दुस कलाम ने स्वंय माना है कि सर छोटू राम शिक्षा कोष से सहायता पाये बगैर उनके लिए नोबेल पुरूस्कार पाना असम्भव था।

दीनबन्धु चौ० छोटू राम हमेशा आपसी भाईचारे, हिन्दू मुस्लिम एकता, इंसानी मोहब्बत एवं सदभावना के पक्षधर रहे। अतः वे नौजवानों को प्रोत्साहन देने के लिए हमेशा डा0 सर मोहम्मद इकबाल के निम्न शब्दों को सार्वजनिक तौर से अत्यन्त स्नेह व आदर सहित दुहराते थे– "यकीने मोहक्कम अम्ले पैहयम मोहब्बत फतेह आलम जहां, जेहादे जिन्दगानी में है ये मर्दो की शमशीरे"। अर्थात तुरन्त पहल, पक्का इरादा व आपसी भाईचार ही मर्दो की ढ़ाल है। उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि उन दिनों कृषक व ग्रामीण समाज में बढ़ती हुई भुखमरी व बेरोजगारी को दूर करने के लिए सर छोटू राम ने अहम् भूमिका निभाई। इसलिए उन्होंने बेरोजगारी व अशिक्षा को दूर करने के लिए किसान मजदूरों के बच्चों को कांग्रेस की नीति के विरोध में सेना में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया, जिसको महिलाओं ने भी उन दिनों एक गीत के रूप में गाना शुरू कर दिया– "भरती हो जा रे रंगरूट, यहां मिले टूटे जूते, वहां मिलेगें बूट"। यही एक मात्र कारण है कि आज हरियाणा प्रांत के अधिकारी सेना प्रमुख भी रह चुके हैं और अनेकों मेजर व लेटीनैन्ट जरनल के पदों पर तैनात हैं।

आज देश की आंतरिक व बाहरी सुरक्षा के ऊपर गम्भीर संकट के बादलों को मंडराते देख तथा राजनेताओं के खोखले बयानबाजी, जनता को कोम व धर्म के नाम पर भडकाकर वोट हासिल करने की ओच्छी राजनीति व पड़ौसी देश पाकिस्तान व चीन की निरन्तर धमकियों को मध्यनजर रखते हुए लेखक को दीन बन्धु के ये सार्वजनिक कथन बार–बार याद आ रहे हैं– "जंग में काम आती हैं न तदबीरें, न शमशीरें, गर हो यकीन जो पैदा तो कट जाती हैं जंजीरें"। किसान वर्ग का आज चौ० छोटूराम व चौ० देवीलाल जैसा कोई एक छत्र नेता नही है जिस कारण यह वर्ग सरकार की किसान विरोधी नीतियों के कारण लगातार पिछड़ रहा है और सरकार में किसान–काश्तकार वर्ग की अगुवाई करने वाला कोई भी नेता नहीं है। किसान अपनी फसल को बेचने के लिये भी धक्के खा रहे हैं और औने पौने दामों पर फसल खरीदी जा रही है। आजादी के 76 वर्ष बाद भी किसान की हालत सुधरने की बजाये उनकी समस्याएं दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही हैं और आने वाले दिनों में किसान भीख मांगने पर मजबूर हो जायेगा। एक अनुमान के अनुसार विगत 10 वर्षो के अन्दर 70,000 से अधिक किसान खुदकुशी कर चुके हैं। राष्ट्र में प्रतिवर्ष 40,000 किसान पीरवार खेती बाड़ी का पुश्तैनी धंधा छोड़कर शहरों में मजदूरी करने को मजबूर है खेती के लगातार गिरते स्तर व बढ़ रहे घाटे के कारण अगस्त 2023 तक कृषि से जुड़े ग्रामीण परिवारों ने मनेरगा स्कीम के अंर्तगत मजदूरी करने की मांग की है। आज तो किसान–काश्तकार अगर अपने हितों के लिये आवाज उठाता है तो उसको षडयंत्र व दबाव के तहत दबा दिया जाता है। यहां तक कि किसानों के विरोध को जातिगत करार देकर आगामी वोट बैंक को पक्का करने की कुचेष्टा की जाती है जो कि राष्ट्रीय एकता विशेषकर ग्रामीण भाईचारे के लिये गभींर खतरा उत्पन्न कर सकता है।

चौधरी छोटूराम एक युग पुरूष थे जिन्होने कृषि क्रांति का सुत्रपात किया। वे कृषि पर आधारित सभी जातियों को किसान समुदाय मानते थे जिनके समुचित विकास के बिना ग्रामीण विकास आसान नहीं है। आधुनिक चेतना के वे सुत्रधार थे। किसान के हितों की वकालत करते हुए वे वायसराय तक से भी भिड़ गए। चौ० छोटूराम

का जीवन उड़ते बालू–कण और पतझड़, शोषण और पीड़ा से ग्रस्त कृषक समाज के उद्धारक के रूप में ही गुजरा क्योंकि उन्होने स्वंय यह सब कुछ भोगा तथा महसूस किया था। उन्होने मुंशी प्रेमचंद के पात्र 'होरी' गोबर और धनियां की पीड़ा का अनुभव किया था, आश्वासनों पर विश्वास नहीं किया बल्कि एक क्रांति दूत बनकर उभरे। वे हमेशा कहते थे "नहीं चाहिए मुझे ये मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।" चौ० छोटूराम सदी की रक्तहीन क्रांति के सुत्रधार बने। दीन बंधु चौ० छोटू राम महिला विकास, सुरक्षा के साथ–साथ उनकी शिक्षा व सम्मान के सदैव पक्षधर रहे। एक बार रोहतक के पास खाप पंचायतों ने मिलकर आग्रह किया कि आपके सुपुत्र नहीं है इसलिए आप दूसरी शादी करवा लो तो उन्होने उनको लताड़ते हुए कहा कि "जब समस्त संयुक्त पंजाब के नर–नारी, सुपुत्र–सुपुत्रियां उनकी संतान हैं, तो दूसरी शादी क्यों करवांऊ"।

दीन बंधु चौ० छोटूराम ने अपने जीवन काल में ही बढ़ रहे प्रदूषण पर आशंका जताई थी तथा वातावरण संरक्षण हेतू सरकार को चेताया था। उन्होने उद्यमकर्ताओं से आह्वान किया था कि वे सरकार से मिलकर वातावरण संरक्षण की योजना बनाएं। जनता को भी जागरूक करने हेतू उन्होने किसानों को खेत को तीन भागों में बांटने को कहा था कि एक भाग में खेती, चारों ओर वृक्ष तथा तीसरे हिस्से में पशुपालन रखने से वातावरण का संरक्षण भी होगा तथा पोषित विकास संभव होगा। आज वैज्ञानिकों को इसकी सुध आई है। समय रहते उचित पग उठाए होते तो आज ओजोन लेयर को क्षति नहीं पहुंचती और इंसान भंयकर बीमारियों से बचा रहता लेकिन केन्द्रिय सरकार की किसानी व कृषि की लगातार अवहेलना के कारण आज आम जनमानस भी दुषित वातावरण में सांस लेने को मजबूर है। वे सादा खाते, सादा पहनते थे ताकि जनता उनका अनुशरण कर निरोगी जीवन व्यतीत कर सके।

किसानों द्वारा पूजे जाने वाले लोक देवता सत्यावादी वीर तेजा जी

– लक्ष्मण सिंह फौगाट

कर्नल नन्द किशोर ढ़ाका चेयरमैन कर्नल डिफेंस एकेडमी कचामन सीटी ने बताया कि हर वर्ष सितम्बर मास के आने वाली बादों (बादवा) की दशमी को लोक देवता सत्यावादी वीर तेजा की पूजा अर्चना करने का महापर्व गुजरात व राजस्थान के लोगों में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। आज के दिन सभी लोग विशेषकर किसान सत्यावादी वीर तेजा जी की पूजा अर्चना करने के रूप में बहुत हर्षोल्लास के साथ इस महापर्व को मनाते है। किसान तेजा जी को उनकी फसलो की रक्षा करने वाले सत्यावादी लोक देवता के रूप में मानते है। ये माना जाता है ढोर–डंगार व जंगली जानवरों से फसलो की रक्षा करते है और बीज बोने का तरीका बताया जिससे अनाज की अधिक पैदावार होती है।

वीर तेजाजी महाराज के पूर्वज उदय राज में अपना कब्जा खेड़ी नाल पर कर लिया और इसे अपनी राजधानी बनाई। उदय राज के हाथों द्वारा बनाई गई राजधानी में कुल 24 गांव मौजूद थे। वीर तेजाजी महाराज अपनी कृपा से लोगों के ऊपर हो रही डाकुओं से रक्षा की और अपने प्राणों को दांव पर लगाकर इन लोगों तथा गायों की रक्षा की थी।

वीर तेजाजी महाराज राजस्थान, मध्यदेश और गुजरात के प्रांतो के लोक देवता से रूप में पूजे जाते हैं। वीर तेजा जी महाराज को राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात के प्रांतों में लोक देवता रूप में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ पूजा अर्चना की जाती है। इतना ही नहीं बेर तेजाजी महाराज को भगवान शिव के नए 11 अवतारों में से एक अवतार माना जाता है और इन्हें राजस्थान, मध्यप्रदेश और गुजरात के साथ–साथ हरियाणा और उत्तर प्रदेश के कुछ रिहायशी इलाकों में लोक देवता के रूप में पूजा जाता है।

लोक देवता तेजाजी का जन्म एक क्षत्रिय जाट धराने में हुआ था उनका जन्म नागौर जिले में खरनाल गांव में माघ में हुआ था। उस खेत को तेजास्ती का धोच नाम से जाना जाता है। उनके पिता गांव के प्रधान थे। गौरधिक मान्यत्ताओं के अनुसार तेजाजी गाँव के मुखिया थे।

महावीर तेजाजी महाराज ने 11 वीं सदी में गायों की रक्षा की और अनेकों बार अपने प्राणों की दांव पर लगाकर को डाकुओं से मुक्त करवाया। प्राचीन समय के डाकू गायों को बन्दी बनाते थे और उन्हें बेच दिया करते थे। परंतु महावीर तेजाजी ने इस क्रियान्व्यन को रोक दिया और गायो की रक्षा की।

महावीर तेजाजी महाराज सत्यवादी और दिए हुए वचन के अटल रहने वाले व्यक्ति थे, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार से वचनों पर अटल रहने वाले महाराज हरिश्चंद्र थे। तेजाजी महाराज ने अपने आत्म बलिदान तथा सदाचारी को अमरत्व प्रदान किया था और उन्होंने अपने गांवों के जनसाधारण लोगों को सदमार्ग के रास्ते पर चलने के लिये प्रेरित करते थे।

यही कारण है कि वीर तेजाजी महाराज के मंदिरों में अलग वर्गों के पुजारी कार्यरत हैं। अतः समाज सुधार में इतना पुरा कोई उदाहरण नहीं है। ऐसा भी कहा जाता है कि महावीर महाराज जी विश्व के पहले समाज सुधारक हैं। महावीर तेजाजी महाराज ने जनसाधारण वर्ग के लोगों के हृदय में हिंदू धर्म के प्रति विशेष युक्ति के विश्वास को पुनः जागृत किया।

वीर तेजाजी महाराज का विवाह प्राचीन समय में रामचंद्र जाट की पुत्री पेमल के साथ हुआ था। वीर तेजाजी महाराज का विवाह अजमेर जिले के पनेर नामक गांव में रहने वाले एक परिवार में हुआ था।

एक बार महावीर तेजाजी महाराज एक बार अपने एक मित्र के साथ अपने ससुराल जा रहे थे। तभी उनके ससुराल जाने के बाद तेजाजी महाराज को यह पता चलता है कि मेणा नाम के डाकू ने अपने साथियों के साथ मिलकर उनकी पत्नी पेमल के गांव की सभी गायों को लूट कर ले गए। तब महावीर तेजाजी महाराज अपने साथी के साथ जंगल की तरफ मेणा डाकू से गायों को छुड़ाने के लिए निकल पड़े।

जाते समय रास्ते में एक बांबी के पास बहुत ही पुराना भाषक नाम का एक नाग (सर्प) उनके घोड़े के सामने आकर खड़ा हो जाता है और उसी क्षण उनका घोड़ा भी तुरंत सामने ही रुक जाता है। वह वीर तेजाजी महाराज को डंक मारना चाहता है। परंतु तेजाजी महाराज को उसे कहते हैं कि तुम अभी रुक जाओ मैं अपने पत्नी के साथ सभी गांव वासियों की गायों को लेकर आ जाता हूं, तब तुम मुझे डस लेना।

महावीर तेजाजी ने अपने वचन के अनुसार मेणा से सभी गायों को छुड़ाकर वापिस लाते हैं। वीर तेजाजी महाराज जब वहां से वापस आते हैं, तो वह पूरी तरह से खून से सने हुए होते हैं। वीर तेजाजी महाराज अपने वचन के अनुसार उस स्थान के पास चले जाते हैं। महावीर तेजाजी महाराज की इस अवस्था को देखकर नाग उनसे कहता है कि तुम्हारा पूरा शरीर घायल है, मैं तुम्हें कहां डंक मारू।

तेजाजी महाराज उसे हँसते हुए कहते हैं कि लो तुम मेरी जीभ पर डंक मार लो। वीर तेजाजी की वचन बद्धता को देखकर सांप उन्हें आशीर्वाद देते हुए यह कहता है कि यदि आज के दिन कोई भी व्यक्ति जो सर्पदंश से पीड़ित है, वह यदि तुम्हारे नाम की ताती बांध देगा, तो उसके शरीर का सारा जहर नष्ट हो जाएगा उसी दिन से अर्थात भाद्रपद की शुक्ल दशमी को महावीर तेजाजी के उस स्थान पर मेला लगा और पूजा अर्चना की जाती है।

प्रतिवर्ष भाद्रपद के शुक्ल दशमी को महा वीर तेजाजी महाराज की याद में एक भारी समारोह का आयोजन होता है, महा वीर तेजाजी महाराज की याद में आयोजित इस समारोह को खरनाल मेला के नाम से जाना जाता है। इस दिन इस मेले में लाखों लोगों की तादाद में लोग बड़ी दूर–दूर से बाजे के साथ महावीर तेजाजी महाराज के दर्शन करने के लिए आते हैं।

वीर तेजाजी महाराज 11वीं सदी में अपने प्राणों को दांव पर लगाकर अनेकों बार लोगों की एवं उनके गायों की रक्षा की। महावीर तेजाजी महाराज को बचपन से ही गायों से काफी लगाव था और यह सदैव गौ सेवा में लीन रहते थे। महावीर तेजाजी महाराज के पिता एक राजा थे, परंतु उन्होंने अपने पिता के राज पाठ पर जरा सा भी ध्यान नहीं दिया और उन्होंने सदैव समाज सुधार एवं वैज्ञानिक तरीके के कार्य किए।

खिलाड़ियों के प्रति दिया गया ब्यान बचकाना हरकत

– डॉ० महेन्द्र सिंह मलिक, आई.पी.एस
पूर्व डीजीपी, हरियाणा

खिलाड़ी, सैनिक और शिक्षक का हमेशा सम्मान करना चाहिए। विनेश फोगाट देश की बेटी है और रहेगी। खिलाड़ी कोई भी हो राष्ट्र की धरोहर पहले हैं अ और किसी पार्टी के सदस्य बाद में है। विनेश फोगाट और बजरंग पुनियाँ राष्ट्र का गौरव है। इस बात के लिए बीजेपी के गृहमंत्री मंत्री का जो बयान आया है कि विनेश अब काग्रेस की बेटी बनकर रह जाएगी, यह गलत है। यह बात प्रदेश के पूर्व डीजीपी भारतीय कुश्ती संघ के पूर्व में अध्यक्ष रहे डॉ महेन्द्र सिंह मलिक ने कहते हुए कहा की खिलाड़ी को किसी पार्टी विशेष से जोड़ना गलत है। यह राष्ट्र की धरोहर है और हमेशा रहेंगे। चाहे वह किसी पार्टी में जाएं। जिस प्रकार पहले योगेश्वर दत्त और गीता फोगाट बीजेपी पार्टी में है और चुनाव भी लड़ चुके है, फिर भी वह देश का गौरव है और रहेंगे। खिलाड़ियों का सम्मान हमेशा करना चाहिए। डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक ने कहा की पिछले दिनों दिल्ली में जो इनके साथ भेदभाव किया गया और महिला प्रताड़ना की गई, वह पूरे राष्ट्र के लिए शर्मसार बात थी। उसके बाद भी इन्होंने इतना संघर्ष किया और यह फिर भी सूर्य की तरह चमकती रही। डॉ. मलिक ने कहा की खिलाड़ी और सैनिक देश का प्रतीक होते है जब वह मैदान में खेलते है तो पूरे राष्ट्र को उन पर गर्व होता है। इसलिए वह देश की असली धरोहर है। उन्होंने सभी राजनितिक पार्टियों से अनुरोध किया है वह जहां से भी खिलाड़ी चुनाव लड़े सभी पार्टियों को इनका साथ देना चाहिए ना कि विरोध करना चाहिए। जिस प्रकार सचिन तेंदुलकर को राष्ट्रपति ने राज्यसभा में मनोनीत किया वह राष्ट्र के लिए गौरव है इसी प्रकार इनको भी कर देना चाहिए था। फिर भी कोई पार्टी इनका टिकट देती है तो इसका सम्मान करना चाहिए और उसके विरोध में किसी भी पार्टी को कोई उमीदवार नहीं खड़ा करना चाहिए।

Thus I come, Thus IGO-K. Natwar Singh

- Suraj Bhan Dahiya

The title line is from the poem "The Patriot", "K. Natwar Singh - a royal who wore many hats and excelled at arts and letters. A politician who had the free access as someone 'close' to four generations of The Gandhi fam?ly Starting with Nehru. Natwar Singh achieved so much and more, that his death could have been glowing celebrations across partisan lines"? That how Times of India paid tributes to Natwar Singh on 11th August, 2024.

If I was asked to write epitaph on K. Natwar Singh, I would reveal his personality like this "K. Natwar Singh was The Gem of The Jat community - excellent with the pen and diplomacy. He was a revelatory portrait of one of the most towering figures of our times in Context of national and international affairs. Very sophisticated in dealings, he was some what not alien to common Jat folk. I draw courage to enliven Natwar Singh from Piny the younger remarked in the Epistles "I hold it a noble task to rescue from oblivion. Those who deserve to be remembered.' Let Dr. Sarup Singh and K. Natwar Singh two literary luminaries not be faded away"

Back to title line: "Thus I go…….". He would be known a departed soul who had a sad falling out with Gandhi family and who shook hands later with BJP dominated his obituaries when the man could have been toasted just for breadth of his experiences, nicely compressed in his book "Profiles and Letters" about his elite acquaintances that included E.M. Forster and Rajagopalachari.

I had two occasions to meet him, one at his residence and second in Nehru Memorial Museum and Library, New Delhi, where in 1995, I had gone to invite him to preside over 'Basant Panchami' Celebrations of Jat Sabha, Chandigarh.

Over a cup of tea, he read a few lines from Nehru's "Discovery of India: Nehru was a luminous man writings reflected the radiance of his spirit. He was the architect of resurgent India. Then he asked me " What would you say about Ch. Chhotu Ram ?" I replied, "Sir, Ch. Chhotu Ram was the daughty Champion of the weak and the lowly. He was the peasant leader without a second in the entire Peasant history. But, I am eager to listen you on Ch. Chhotu Ram's thoughts and deeds". He saw me with his glazing eyes and nodded to come to Chandigarh on Chhotu Ram's Jayanti, but at the eleventh hour he showed his inability to grace the occasion.

K. Natwar Singh passed away on 10th August, 2024 at the ripe age of 94 years experiencing long isolation. On 12th August, 2024 Smt Sonia Gandhi, condoled the demise of Natwar Singh saying that he made "important Contributions to national affairs and that he will be missed by a wide circle of friends". However, the tragedy occurred that how did a Zealot persona Suddenly turn into a pariah ?

वीर सिपाही

– रामचन्द्र पन्नू

आन बान मान पर, सब कुछ लुटाता चल।
जिन्दगी है शान की, शान में बिताता चला।।
कारगिल के पहाड़ पर, दुश्मन को मारकर।
रूधिर की बौछार कर, तू देश को बचाता चल।।
आन बान मान पर, सब कुछ लुटाकर चल।
जिन्दगी है शान की, शान में बिताता चल।।
बटालियन पर वार कर, द्रास पर संहार कर।
देशी तोप से मारकर, तू देश को दमकाता चल।।
आन बान मान पर, सब कुछ लुटाकर चल।
जिन्दगी है शान की, शान में बिताता चल।।
वारात का इन्तजार है, परमवीर चक्र त्यार है,
श्हादत तेरी को तू, चाँद तक चमकाता चल।।
तू देश की धरोहर है, तू ही मानसरोवर है
तेरे इस देश को तू, दुनियां में चमकाता चल।।
आन बान मान पर, सब कुछ लुटाकर चल।
जिन्दगी है शान की, शान में बिताता चल।।
तेरे देशवासी भी पीछे नहीं, धन और खून बेहिसाब है
हम हैं दिवार तेरे पीछे, तू वे खोप मुस्काता चल।।
आन बान मान पर, सब कुछ लुटाकर चल।
जिन्दगी है शान की, शान में बिताता चल।।

वैवाहिक विज्ञापन

- SM4 Jat Girl (DOB 18.08.98) 26/5'4" Master in Public Health from Edith Cowen University Australia. MBBS from K.D. Medial College Mathura, Agra. Father General Secretary, Haryana Wrestling Association and runs Education Society. Mother Government teacher. Avoid Gotras: Sangwan, Dhull, Dahiya, Rathee, Lather. Cont.: 9418413789, 9999038751
- SM4 Jat Girl (DOB (06.02.92) 32/5'3" M. A. B.Ed. Working as teacher in private school at Mohali (Punjab). Father retired Inspector from Chandigarh Police. Family settled in Chandigarh. Avoid Gotras: Nain, Sangwan, Dhaliwal, Panghal. Cont.: 8699726944
- SM4 Jat Girl (DOB (02.08. 2001) 23/5'1" B. A. (Hons. Economics) with Math. M.A. Economics. Computer Course of one year. Avoid Gotras: Dagar, Duhan, Suhag. Cont.: 9463586496
- SM4 Jat Girl (DOB (28.01.90) 34/5'3" Employed as Class-I Officer in Haryana Government with package of Rs. 29 Lalkh PA. Preferred match settled in Chandigarh, Panchkula. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Dahiya, Khatri. Cont.: 8708116691
- SM4 Jat Girl 26/5'4" B.Sc. B.Ed., M.Sc. Physics, M.Ed., Pursuing PhD. Working as Teacher in Delhi World Public School Dhakoli (Punjab). Avoid Gotras: Lakra, Pawar. Cont.: 9216000072
- SM4 Jat Girl (DOB 19.01.95) 29/5'2" A.N.M., G.N.M. (Nursing). Working in Alchemist Hospital Sector 21, Panchkula. Family settled at Dhakoli (Punjab). Avoid Gotras: Dhaka, Chauhan. Cont.: 9872111042
- SM4 Jat Girl (DOB 07.09. 97) 27/5'8" B. Tech. (CS) from YMCA Faridabad. Employed as Probationary Officer in State Bank of India since April, 2022. Pursuing for I.A.S. Father M. D. Cooperative Bank Fatehabad. Mother housewife (MA, B.Ed.) Avoid Gotras: Pattar, Moun, Goyat, Dhull, Punia. Cont.: 9467210303
- SM4 Jat Girl (DOB 08.05.97) 27/5'4" B. E. Computer Science. Working in Veritas Technologies as SQA Engineer in Pune. Income Rs. 16 LPA. Father District Manager in HAFED. Mother Advocate. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Malik, Mahala, Boora. Cont.: 9417305287
- SM4 Jat Girl (DOB 22.06.97) 27/5'3" Employed as Nursing Officer in PGI Chandigarh. Preferred match from Tri-city, Chandigarh. Avoid Gotras: Bhanwala, Mor, Khatkar. Cont.: 9417579207
- SM4 Jat Girl (DOB 11.02.98) 26/5'5". M. A. English from Punjab University Chandigarh. Steno English and Computer Diploma from HATRON. Working in private job in Chandigarh. Father retired Superintendent from Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Preferred match in Tri-city. Avoid Gotras: Dahiya, Balyan, Jatrana. Cont.: 6239058052
- SM4 Jat Girl (DOB 12.09.97) 26/5'4" B. com. from Punjab University. Employed in Government Bank Chandigarh. Avoid Gotras: Bamal, Lohan, Kalkande. Cont.: 9316039890
- SM4 Jat Girl (DOB 08.08.96) 28/5'4" BSC (Non-Medical). M. A. English. Employed as Accountant (Non transferable) in the office of Principal Accountant General (A&E) Haryana, Chandigarh. Father employed in a reputed Fertilizer & Chemical Company. Mother housewife. Family settled at Kurukshetra (Haryana). Avoid Gotras: Sheokand, Goyat. Cont.: 8199998908
- SM4 (Divorced) Jat Girl 34/5'2" M.B.A. Pursuing PhD. Employed as Assistant Professor in Ch. Ranbir Singh Hooda University, Jind on contract basis. Father Chief Technical Officer retired from IIWBR, Karnal. Mother housewife. Family settled at Karnal. Preferred educated equally qualified match. Avoid Gotras: Dhillon, Kaindal, Jaglan. Cont.: 9416293593, 8307808611
- SM4 Jat Girl (DOB 04.03.98) 26/5'3" Lieutenant in Indian Army in EME branch. Posted in J & K area. Younger brother also Lieutenant in Indian Army. Father serving in Air Force. Mother Housewife. Avoid Gotras: Malik, Dhillon, Dangi. Cont.: 9541692438.
- SM4 Jat Girl (DOB 31.01.95) 28/5'1" B.Sc., M.Sc. (Botany). UGC, NET qualified. Ph.D in Botany from P. U. Chandigarh. Employed as Assistant Professor in College at Karnal on contract basis. Father retired from Defence. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathi, Kharb, Rana. Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Boy (DOB 28.06.96) 28/ 6 feet. MCA. Working in IT at Chandigarh location. Income Rs. 14 LPA. Father Sub Inspector in Chandigarh Police. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sihag, Lather, Redhu, Khatkar. Cont.: 9417862853
- SM4 Jat Boy (DOB 29.04.91) 33/5'7" PhD. Submitted in Structural Engineering/Viva process completed/notification awaited. Working as Guest Faculty DCRUST. Father Associate Professor of Physics at Jat College, Rohtak. Mother Government School Principal. Preferred M.Sc./Chemistry/Bio./Math/Physics with NET. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Gill, Dahiya, Gehlawat. Cont.: 9416193949
- SM4 Jat Boy (DOB 24.10.96) 27/5'10" Plus two, Diploma in Electrician. Family settled at Pinjore. Avoid Gotras: Bhanwala, Ruhal, Redhu. Cont.: 8053104615
- SM4 Jat Boy (DOB 10.01.96) 28/5'11" B. Tech. in Civil Engineering. Employed at Clerical Cadre post in Housing Board, Chandigarh on regular basis. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Kaliraman, Nain, Khatri, Malik. Cont.: 9780514690
- SM4 Jat Boy (DOB 02.01.95) 29/6'1" B. Tech. (IT), NMIMS Mumbai. Post Graduation in MBA (Marketing), NMIMS Mumbai. Worked at Aranca Global Research & Analytics Firms as Consultant at package Rs. 15 LPA. Currently working as a Freelance Project consultant and exploring new avenues to venture into. Father retired from HUDA, currently in construction business. Family income Rs. 70 LPA. Mother housewife. Avoid Gotras: Dalal, Gehlawat, Dhankhar. Cont.: 9910088655
- SM4 Jat Boy (DOB 21.08.95) 29/5'9" B. Tech. in Mechanical Engineering. Working as SEO Specialist in Mohali with Rs. 5 LPA package. Father in Government job. Mother housewife. Own house at Chandigarh. Avoid Gotras: Dabas, Sangwan, Dhankhar. Cont.: 7508929045, 9779132009
- SM4 Jat Boy (DOB 15.01.94) 30/ 6 feet. MBBS, M.D. in Medician. Only son. Father businessman. 20 acre agriculture land. Two Aahrat shops at Fatehabad. Preferred match of same profession. Avoid Gotras: Bharia, Saharan, Bhidaria. Cont.: 7015176069
- SM4 Jat Boy (DOB 07.07.98) 26/5'7" . M. D. final year from AIIMS

Delhi in Radiation Oncology. Working as J. R. in AIIMS Delhi. Income Rs. 12 LPA. Father in Government job as a Building Inspector in Ulb department. Mother housewife. Preferred match M. D. Doctor or gazetted officer. Family settled at Rohtak. Avoid Gotras: Dagar, Kadyan. Cont.: 9812645624

- SM4 Jat Boy (DOB 02.07.95) 29/5'11". B. com., M. Com. from Punjab University. Chartered Account in practice for last five years. Avoid Gotras: Malik, Hooda, Dalal. Cont.: 7889059388
- SM4 Jat Boy (DOB 02.11. 2000) 23/6'1". B. Sc. Non-medical, M.Sc. Chemistry. Working as Manager in DCB Bank Hisar. 12 acre agriculture land. Avoid Gotras: Punia, Chahal, Beniwal. Cont.: 9217884178
- SM4 Jat Boy (DOB 02.10. 87) 36/5'2". Medical Engineer. Working in Mohali Rs. 15000/- PM. Avoid Gotras: Hooda, Malik. Cont.: 9915147487
- SM4 Jat Boy (DOB 18.10.90) 33/6'1". B. Tech. Employed as CBI Officer at Chandigarh. Father retired Under Secretary from Haryana government. Mother housewife. Family settled at Zirakpur (Punjab). Preferred well qualified and working match. Avoid Gotras: Khasa, Dahiya, Lathwal. Cont.: 9023492178, 7837551914
- SM4 Jat Boy (DOB 15. 12. 96) 27/5'9" B. E. (Civil) from Punjab University Chandigarh. Employed as J.E. Punjab Government Public Health Department through PPSC at Dera Bassi (Punjab). Father Class-II Officer in Central Government. Mother Group B service in Central Government. One flat in Zirakpur (Mohali). One plot in HUDA Ambala Cantt. and one plot in Sector 27 Panchkula. Agriculture land and ancestral house at native village. Avoid Gotras: Dalal, Mor, Sindhu. Cont.: 7973431263
- SM4 Jat Boy (DOB 13.01.97) 27/5'8" B. A. GBT, one year digital marketing diploma, one year HATRON diploma. Working in private firm. Father in Government job in Haryana Civil Secretariat. Mother JBT teacher in Education Department Haryana. Preferred local match. Avoid Gotras: Kundu. Aadhran, Dahiya. Cont.: 9915920806, 9878769627
- SM4 Jat Boy (DOB 06.07.96) 28/5'6" B. A. from Punjab University Chandigarh. Employed as Junior Accountant Assistant Level-5 Indian Railways at Chandigarh. Father Deputy Superintendent in Directorate of Employment Panchkula. Mother housewife. Avoid Gotras: Chahal, Bagri, Dangi. Cont.: 9416561365
- SM4 Jat Boy (DOB 30.12.94) 29/5'11" M.A. Employed as Clerk in Haryana State Consumer Commission, Panchkula. Father retired from Army and Haryana Government. Mother housewife. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Mor, Dhariwar,Chahal. Direct Gotras: Kataria, Punia, Grewal, Malik, Nehra. Cont.: 9416603097
- SM4 Jat Boy (DOB 20.02.92) 32/5'8" Qualification 10+2, DCA. Driving own cab in company. Own house at Panchkula. Avoid Gotras: Siwach, Grewal, Hooda. Cont.: 9417207683, 9988874979
- SM4 Jat Boy 24/6 feet. M. A. Work of Finance and Property. Avoid Gotras: Dangi, Kundu, Chhilar. Cont.: 7973119972.
- SM4 Jat Boy (DOB 28.04.93) 31/6'2" B. Com. Hons., M. Com. Hons. from MDU Rohtak. Self employed and set up an auto ancillary manufacturing unit in Rohtak. Self sustaining and providing employment to 15 youths. Annual income INR 25 lakh. Father retired Additional Director from Industry Department, Haryana. Mother Senior Lecturer (school cadre) in education Department. Own house at Rohtak. 21 agriculture land in village. Avoid Gotras: Sehrawat, Tomar, Dahiya. Cont.: 9416518530
- SM4 Jat Boy (DOB 11.07.93) 31/6'2" Physics Hons., LLB, LLM from Delhi University. Employed as Assistant Distt. Attorney (Gazetted Officer) in Public Prosecution Haryana. Father Advocate at District Court, Rohtak. Mother Government teacher in Rohtak. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Hooda, Kadyan, Gahlot. Cont.: 8802748628
- SM4 Jat Boy MBBS from GMCH Sector 32 Chandigarh (AIR 1870). Holds GMC, UK Registration, Passed AMC Part 1 Australia. Currently working in ICU Paras Hospital Panchkula. Father retired Superintendent from PWD, B & R, Haryana. Mother Deputy Superintendent in DGHS, Haryana. Avoid Gotras: Ahlawat, Kadyan. Cont.: 7087151343, 9463124790
- SM4 Divorced Jat Boy (DOB 10.01.93) 31/ 6 feet. Own business. Father Ex-Serpanch. Ten acre agriculture land in village. Family settled in Delhi. Avoid Gotras: Gehlawat, Tehlan. Cont.: 9050171888, 8053604542
- SM4 Jat Boy (DOB August 99) 24/5'10" B. Tech. Pursuing M. Tech Mechanical. Owner of Petrol pump. Transport business. Mother Government employee HES-II, Father (late) Chief Engineer. Avoid Gotras: Nandal, Mehlan, Gehlawat. Cont.: 9996509501
- SM4 Jat Boy (DOB 27.01.97) 27/5'10" Employed as Production Manager in GPC Electronics Newzeland. Permanent Resident in Newzeland. Avoid Gotras: Sheoran, Kalirawna, Bhalothia. Cont.: 9216524694
- SM4 Jat Boy (DOB 20.05.96) 28/5'10" Bachelor in Hotel Management from Chitakara University. Master of Hotel Management from Sydney, Australia. Currently working in Front office Management Sheraton Grand Sydney Hyde Park Australia Sydney. Father ASI in Chandigarh Police. Mother housewife. Avoid Gotras: Dahiya, Joon, Bajaar. Cont.: 9779903382
- SM4 Jat Boy (DOB December 90) 33/5'10.5" B. Tech Mechanical. MBA (Operations). Supply Chain Management Certification-IIT Delhi. Job: Analyst Study at Gurugram. Father retired Labour inspector. Mother Government job BEL Panchkula. Family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Dangi, Malik, Nandal. Cont.: 8901049242
- SM4 Jat Boy (DOB 20.10.92) 31/5'5" Graduate. Doing private job. Father retired from government job. Mother in private job. Family settled at Chandigarh. Avoid Gotras: Lamba, Nandal, Ghalyan. Cont.: 7696771747
- SM4 Jat Boy (DOB 10. 02. 98) 26/5'8" BCA. Working as Analyst, NAB MNC Gurugram. Package 10+Incentive LPA. Father Defence pensioner. Mother housewife. Family settled at Ambala Cantt (Haryana). Avoid Gotras: Rathee, Kharb, Rana.Cont.: 9812238950
- SM4 Jat Boy (DOB 18.08.94) 29/6 feet. B.Tech (Mechanical) from Kurukshetra University. Employed as Station Master in Railway at Ambala. Father retired from Army, now employed in Railway. Mother housewife. Avoid Gotras: Malik, Budhwar, Rana. Cont.: 9812331339
- SM4 Jat Boy (DOB 01.05.99) 25/5'6" B.Tech. (CSE). MBA from Chandigarh University. Working as Advisor in MNC at Gurugram. Father Real Estate Agent. Mother housewife. Preferred well educated/settled match with some achievements in academics. Avoid Gotras: Narwal, Dahiya, Tomar. Cont.: 8708566511, 8685911007

Dr. M.S. Malik, IPS (Retd), Former DGP, Haryana being honoured with Heart Foundation Award 2024 at Hyatt Regency Chandigarh on 04 August, 2024

सरकार शहीद कुलदीप मलिक की पत्नी को दे एक प्लाट

शहीद को मिलने वाली सुविधाएं तुरन्त दी जायें - डॉ0 महेन्द्र सिंह मलिक

प्रदेश के पूर्व डीजीपी एवं जाट सभा चंडीगढ़, पंचकुला के अध्यक्ष डॉ. महेंद्र सिंह मलिक ने केंद्र सरकार से मांग की है कि खेल गांव निडानी के शहीद कुलदीप मलिक के परिवार को सम्मान के तौर पर 5 करोड़ रूपये की आर्थिक सहायता तथा एनसीआर में एक रिहायशी एक कनाल का प्लॉट दिया जाए। डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक ने निडानी गांव में शहीद कुलदीप मलिक के घर पहुंच कर शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित कर भगवान से उनकी आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करते हुए परिवार को हौंसला दे रहे थे। डॉ. मलिक शहीद कुलदीप मलिक के पिता ओमप्रकाश मलिक से मिलकर उनकी हिम्मत बढ़ाई और कहा की हमारा सपूत देश के लिए शहीद हुआ है यह हमारे लिए गर्व की बात है। डॉ महेन्द्र सिंह मलिक ने कहा कि शहीद कुलदीप मलिक एक बहादुर और समर्पित सैनिक थे, जिन्होंने मातृभूमि की सुरक्षा के लिए आतंकवादियों से लड़ते हुए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। उनका सर्वोच्च बलिदान अनंत काल तक आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा के रूप में सदैव जीवित रहेगा। वह राष्ट्र के सबसे बहादुर सपूतों में से एक थे और इन्हें युद्ध नायक के रूप में और उनकी देशभक्ति और वीरतापूर्ण कार्यों को हमेशा याद किया जाएगा। डॉ. महेन्द्र सिंह मलिक ने कहा कि हरियाणा सरकार से भी मांग करते है की परिवार को वो सभी सुविधाएं दी जाये जो एक शहीद को दी जाती है। इस मौके पर शामलों कलां के सरपंच विजेंद्र मलिक, प्रवक्ता आनन्द लाठर, पूर्व सरपंच सुरजीत मलिक, अंतराष्ट्रीय कबड्डी खिलाडी नरेश रामकली, राजीव मलिक, वेदपाल मलिक, शुभराम मलिक, अक्षय मलिक रामकली, मास्टर, रणबीर शर्मा, चन्द्र सिंह सहित अनेक ग्रामीण मौजूद रहे।

आर्थिक अनुदान की अपील

प्रिय साथियों, भाई–बहनों एवं बुजुर्गो,

आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि गांव नोमैई, ग्राम पंचायत कोटली बाजालान कटरा–जम्मु में जी.टी. रोड़ 10 पर चौ० छोटूराम यात्री निवास कटरा के लिये प्रस्तावित 10 कनाल भूस्थल पर चार दिवारी का निर्माण पूरा हो चुका है जिस पर लगभग 35 लाख रुपये खर्च हो चुके है। यात्री निवास स्थल पर विकास एवं पंचायत विभाग कटरा द्वारा सरकारी खर्च से दो महिला व पुरूष शौचालय एवं स्नानघर का निर्माण पहले से किया जा चुका है। यात्री स्थल की लिंक रोड़ पर छोटी पुलिया का काम पूर्ण हो चुका है तथा यात्रियों के ठहरने के लिये 5 कमरे पूर्ण रूप से तैयार हो चुके है।

यात्री निवास भवन का शिलान्यास व दीन बंधु चौधरी छोटू राम की विशालकाय प्रतिमा का अनावरण 10 फरवरी 2019 को बसंत पंचमी उत्सव एवं दीनबंधु चौधरी छोटूराम की 136वीं जयंती समारोह के दौरान महामहिम राज्यपाल, जम्मु कश्मीर माननीय श्री सत्यपाल मलिक, केंद्रीय मंत्री चौधरी बीरेन्द्र सिंह, केंद्रीय राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पीएमओ डॉ० जितेंद्र सिंह व जाट सभा के अध्यक्ष एवं हरियाणा के पूर्व पुलिस महानिदेशक डॉ० एम एस मलिक, भा०पु०से० (सेवानिवृत) की उपस्थिति में सम्पन्न किया गया।

यात्री भवन में फैमिली सुट सहित 300 कमरे होगें। जिसमें मल्टीपर्पज हाल, कांफ्रैंस हाल, डिस्पेंसरी, मैडीकल स्टोर, लाइब्रेरी, बच्चों की प्रतिभा विकास एवं विभिन्न व्यवसायिक व सुरक्षा संबंधी सेवाओं में प्रवेश के लिए कोचिंग की विशेष सुविधाएं उपलब्ध होगी। सुरक्षा सैनिकों, शहीद परिवारों व उनके आश्रितों के लिए मुफ्त ठहरने तथा माता वैष्णों देवी के श्रद्धालुओं के लिए विशेष सुविधाएं प्रदान की जाएगी। यात्री निवास के निर्माण के लिये श्री राम कंवर साहु सुपुत्र श्री पूर्ण सिंह, मूल निवासी गांव बीबीपुर, जिला जीन्द, वर्तमान निवासी मकान नं0 110, सुभाष नगर, रोहतक द्वारा 5,11,111 रुपये तथा श्री सुखबीर सिंह नांदल, मकान नं. 426–427, नेमी सागर कालोनी, वैशाली नगर, जयपुर द्वारा 5,01,000 रुपये तथा श्री देशपाल सिंह, मकान न0 990, सैक्टर–3, कुरुक्षेत्र (हरियाणा) द्वारा 5,00,000 रुपये की राशि जाट सभा को दान स्वरूप प्रदान की गई है।

अतः आप सभी से नम्र निवेदन है कि इस कल्याणकारी व पुनित सामाजिक कार्य के लिए स्वेच्छा अनुसार शीघ्र अनुदान देने की कृपा करें। यदि कोई दानी सज्जन यात्री निवास में कमरे के निर्माण हेतु 5 लाख रूपये या इससे अधिक की राशि दान देता है तो उसका नाम भवन परिसर में उचित स्थान पर अंकित किया जाएगा। यात्री निवास भवन के लिए अनुदान देने वाले सज्जनों का उचित विवरण रखा जाएगा और उनका नाम सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'जाट लहर' में भी प्रकाशित किया जाएगा। भवन निर्माण की अनुदान राशि चैक, डिमांड ड्राफ्ट द्वारा 'जाट सभा चंडीगढ़' के पक्ष में जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, मध्य मार्ग, चंडीगढ़ में भेजी जा सकती है अथवा आर.टी.जी.एस की मार्फत सीधे जाट सभा के बचत खाता नंबर 50100023714552, आईएफएससी कोड– एचडीएफसी 0001324 में ट्रांसफर की जा सकती है। अनुदान की राशि आयकर अधिनियम की धारा 80–जी के तहत आयकर से मुक्त है।

निवेदक : कार्यकारिणी जाट सभा चंडीगढ़/पंचकुला,
चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

सम्पादक मंडल

सरंक्षक एवं सम्पादक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : **0172-5086180, M-9877149580**
Email: jat_sabha@yahoo.com; Website: www.jatsabha.org

सर छोटूराम जाट भवन, सैक्टर–6, पंचकूला
फोन : 0172–2590870,M-9467763337
Email: jatbhawan6pkl@gmail.com

चौधरी छोटू राम सेवा सदन, कटरा, जम्मू

Postal Registration No. CHD/0107/2024-2026

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सरंक्षक सम्पादक डा. एम. एस. मलिक ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोसियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2–बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27–ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।